ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्षः 13 अंकः 148 हिन्दी-अंग्रेजी मासिक पत्रिका सितम्बर 2020 30/-प्रति

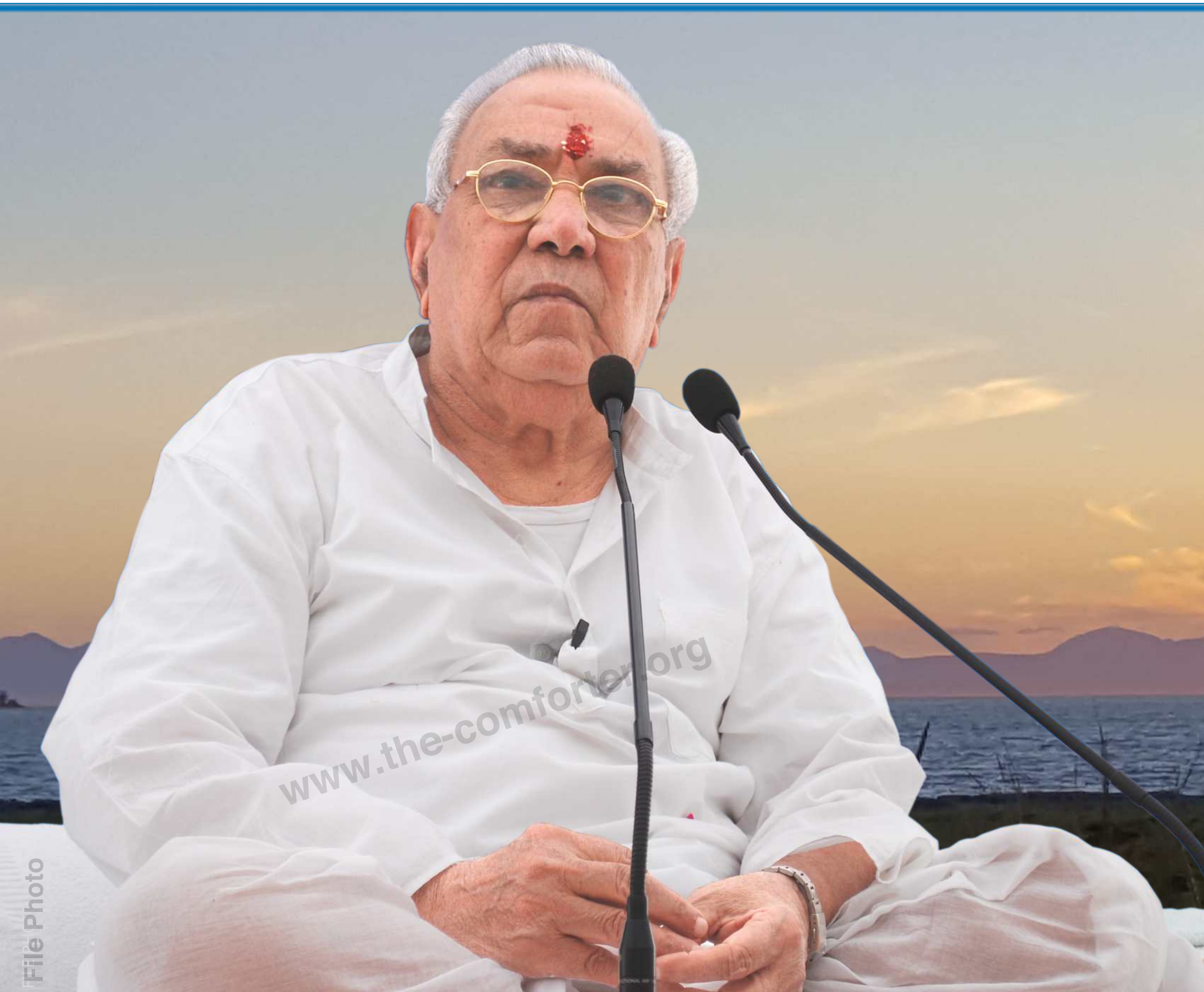

क्या एक निर्जीव चित्र सजीव पर प्रभाव डाल सकता है ?

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ?

सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर इनके चित्र पर ध्यान करके देखें। (अपने घर बैठे ही)

मंत्र दीक्षा के लिये डायल करें - 07533006009

प्रार्थना

हे प्रभु ! मुझे तेरे ऊपर वह शांत विश्वास प्रदान कर, जो सभी कठिनाइयों को जीत लेता है।

ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी (ब्रह्मलीन)

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्ष: 13 अंक: 148 | हिन्दी मासिक पत्रिका | सितम्बर 2020

वार्षिक: 300/- | द्विवार्षिक: 600/- | मूल्य 30/-

संस्थापक एवं संरक्षक:

पूज्य सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

सम्पादक:

रामूराम चौधरी

कार्यालय:

स्पिरिचुअल साइंस पत्रिका

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र
पो. बॉक्स नं. - 41,
होटल लेरिया के पास,
चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत

+91 291 2753699
+91 9784742595
E-mail:
spiritualscienceavsk@gmail.com

Head Office

Spiritual Science Magazine:

Adhyatma Vigyan Satsang Kendra
Post Box No. - 41
Near Hotel Lariya, Chopasani,
Jodhpur (Raj.) India - 342001

+91 291 2753699
+91 9784742595
E-mail:
spiritualscienceavsk@gmail.com
Website:
www.the-comforter.org

अनुक्रम

स्पष्ट दिशा निर्देश....4
पार्थिव जीवन (सम्पादकीय)....5-7
जो अंत तक धीरज धरे रहेगा, उसी का 'उद्धार' होगा....8
एक व्यक्ति का दिव्य रूपान्तरण....9
How does spiritual consciousness spread?....10-12
पूर्व निश्चित व्यवस्था....13
भारतीय योगदर्शन का मूल उद्देश्य मुक्ति है....14
शर्म, संकोच और हठधर्मीता की आखिर नहीं चल सकी....15-17
ईश्वर का ध्यान....18
अवसाद पर विजय....19
गुरु कृपा का महाप्रसाद....20
एष धर्मः सनातनः (यह सनातन धर्म है)....21
सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण....22
जब गुरुदेव साथ हैं तो फिर गम की क्या बात है ?....23
मेरी सच्ची नियति क्या है ?....24
भगवान् की कृपा में विश्वास....25
योग के आधार....26
मानस की नीरवता....27
वर्तमान भारत....28
साधना विषयक बातें....29-30
सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से....31
मनुष्य शरीर का संघटन....32
गुरुदेव का प्रवचन 22 मई 2003....33-34
रूपान्तरण (Transformation)....35-36
नीरव शांति....37
अपने को उस "अनन्त" में लय करने का प्रयत्न करें....38
ध्यान की विधि....39

स्पष्ट दिशा निर्देश

कौन व्यक्ति, क्या कार्य करेगा ?

''मैं देख रहा हूँ, इस क्षेत्र में जो व्यक्ति माध्यम होंगे, वे मुझसे जुड़ने आरम्भ हो गये हैं। निरर्थक लोग अगर आ भी जाते हैं तो या तो भयभीत हो कर या विशेष परिस्थितियों वश मुझसे फिर नहीं मिल सकते। प्रभु की यह बड़ी विचित्र लीला है। कौन व्यक्ति क्या कार्य करेगा, इस सम्बन्ध में भी बहुत ही स्पष्ट दिशा निर्देश मिल रहा है।

–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग
11.04.1988

www.the-comforter.org

पार्थिव जीवन,
महान् देव का अपना चुना हुआ आवास है

पार्थिव जीवन, महान् देव का अपना चुना हुआ आवास है और उनकी चिरकालिक इच्छा है कि उसे अंधे कारागार से भव्य भवन और स्वर्ग तक पहुँचाने वाले उच्च मंदिर में बदल दें।

मानव से अतिमानव की ओर होने वाले आरोहण से मानवता में जो परिवर्तन आएगा तथा अतिमानव का कैसा स्वरूप होगा उस संबंध में श्री अरविन्द ने विस्तार से लिखा है–

इस गोचर और दृश्य जगत् का गुप्त कारण है निश्चेतन भौतिक द्रव्य में अतिचेतन आत्मा का अंतर्लयन। धरती की पहेली का संकेत शब्द है, एक छिपी हुई असीम चेतना और शक्ति का–जड़ दिखनेवाली परन्तु भयंकर रूप से चालित संज्ञाहीन प्रकृति में से –क्रमशः ''विकास''।

पार्थिव जीवन, महान् देव का अपना चुना हुआ आवास है और उनकी चिरकालिक इच्छा है कि उसे अंधे कारागार से भव्य भवन और स्वर्ग तक पहुँचाने वाले उच्च मंदिर में बदल दें।

जगत् में भगवान् का स्वरूप मन के लिये एक पहेली है। लेकिन हमारी बढ़ती हुई चेतना को वह एक सरल और अनिवार्य उपस्थिति प्रतीत होता है।मुक्त होकर हम शाश्वत सत्ता की उस अक्षर स्थिरता में प्रवेश करेंगे जो महत्त्वपूर्ण परिवर्तनशील रूपों को धारण करती है। प्रदीप्त होकर हम अनंत चेतना की उस अविभाज्य ज्योति के बारे में अभिज्ञ होंगे जो यहाँ अनेक प्रकार के समूहीकरण और ज्ञान के ब्योरों में प्रकट होती है। शक्ति में उदात्त होकर हम अपने–आप आरोपित की गयी सीमाओं में, अपने चमत्कार क्रियान्वित करने वाली सर्वशक्तिमान शक्ति की असीम

www.the-comforter.org

गतिविधियों में भाग लेंगे। दुःखहीन आनंद में स्थिर होकर हम अपरिमेय आनंद की निश्चलता और उसका उल्लास पायेंगे जो सदा के लिये अपने सर्जक और अभिव्यक्तिशील जगत् पर अधिकार करने वाले और आत्म संयत आनंद की लहरें और सदा बढ़ती हुई बाहर की ओर जाने वाली और भीतर की ओर आनेवाली गहनताएँ पैदा करता है। चूंकि हम भीतर से आत्मा की अंतरात्माएँ हैं इसलिये जब विकसनशील परम देव यहाँ अपनी खुली गति से काम करेंगे तो यह हमारी चौमुही अनुभूति की प्रकृति होगी।

अगर यह पूर्ण अभिव्यक्ति शुरू से ही होती तो कोई पार्थिव समस्या न होती, वृद्धि की कोई व्यथा न होती। मन, इच्छा, प्राण और शरीर में ज्ञान, शक्ति, आनंद और अमर स्थायित्व की चकरायी हुई खोज न होती परंतु इन परम देव ने, चाहे हमारे भीतर हो या हमारे बाहर, चीजों में और शक्तियों और प्राणियों में प्रकृति की निश्चेतना में अंतर्लयन से शुरू किया और अपने प्रतीयमान विरोधियों में अभिव्यक्ति से आरंभ किया। विस्तृत वैश्व निश्चेतना और जड़ता और संवेदनहीनता, एक प्रारंभिक छद्मवेश में से जो प्रायः असत् है, भौतिक के अंदर आत्मा ने विकसित होना और धीरे–धीरे, मानो अनिच्छुक और धीरे–धीरे झुकने वाली सामग्री में से अपनी शक्ति, ज्योति, अनंतता और आनंद को रूप देना पसंद किया।

पार्थिव विकास का महत्त्व गुप्त रूप से अंदर निवास करने वाली किसी आत्मा की उत्तरोत्तर मुक्ति है। भौतिक प्रकृति में अंतर्लीन किसी दिव्य व्यक्ति या वस्तु के कठिनाई से प्रकट होने और

धीमे संभवन में इस रहस्य का मर्म है। आत्मा अपनी सभी संभाव्य शक्तियों के साथ अपनी पहली विधिवत् सहारा देनेवाली, फिर भी प्रतिरोधी द्रव्य की नींव के रूप में है। बाद में आनेवाली और संकल्पित रूप से उभरती हुई गतियाँ, प्राण और मन, अंतर्भास और अंतरात्मा और अतिमानस और परम देव का प्रकाश पहले से ही भौतक द्रव्य की प्रारंभिक शक्ति और प्रथम अभिव्यंजक मूल्यों में अवरूद्ध और धुंधले ढंग से दबे पड़े हैं।

क्रम-विकास होने से पहले यह जरूरी है कि प्रकट होनेवाले भागवत सर्व का अंतर्लयन हो। अन्यथा सुव्यवस्थित और महत्त्वपूर्ण क्रम-विकास होने की जगह एक के बाद एक अपूर्व दृष्ट वस्तुओं की रचना होती जो अपनी पूर्ववर्ती वस्तुओं में मौजूद न होती। जो उनका अनिवार्य निष्कर्ष या क्रम में उनके बाद आनेवाली न होती।

यह जगत् ऊपर से दीखने वाली कोई ऐसी व्यवस्था नहीं है जिसका संचालन कोई अव्याख्येय संयोग करता हो। न ही कोई अद्भुत यंत्र है जिसका आविष्कार लड़खड़ाती हुई निश्चेतन शक्ति या यांत्रिक आवश्यकता ने किया हो। न ही यह एक ऐसी रचना है जिसे बाहरी होने के नाते अनिवार्य रूप से सीमित स्रष्टा ने अपनी सनक या इच्छा के अनुसार बनाया हो। ये समाधान मानसिक रूप से मनोगम्य है, इनमें से हर एक वस्तुओं की एक दिशा या एक रूप की व्याख्या कर सकता है। लेकिन एक ज्यादा बड़ा सत्य है और सफलतापूर्वक सब पहलुओं को मिला सकता है और पहेली के सभी तथ्यों पर प्रकाश डाल सकता है।

वस्तुतः सब कुछ वैश्व संयोग का परिणाम होता तो नयी उन्नति की कोई आवश्यकता न रहती, तब जगत् मन से परे की किसी चीज के प्रकट होने की जरूरत न होती और निश्चय ही ऐसी अवस्था में निरर्थक अंधे भौतिक भँवर में से मन के ऊपर उठने की भी जरूरत न थी। तब तो स्वयं चेतना भी एक आकस्मिक आभास, विचित्र भ्रांतिपूर्ण प्रतिबिम्ब या भौतक द्रव्य का भूत होती।

या अगर सब कुछ यांत्रिक शक्ति का कार्य होता तब भी मन के वही पीसने वाले यंत्र के एक भाग के रूप में प्रकट होने की कोई जरूरत न थी। इस सूक्ष्मतर परंतु कम योग्य, टटोलते हुए यांत्रिक आविष्कार के लिये कोई अनिवार्य पुकार न थी। भूल न करने वाली पहली मशीन के पर्याप्त कील कांटों और पिस्टनों पर मेहनत करने के लिये किसी दुर्बल चिंतनशील मस्तिष्क की आवश्यकता न थी। इस चमकीली और कष्टदायक जटिलता पर अतिमानस और जोड़ दिया जाय तो यह एक और अनावश्यक अत्यधिकता और चमकदार धृष्टता होगी। यह एक क्षण भंगुर चेतना का अपना सृजन करने वाली अधिक बड़ी निश्चेतन शक्ति को अपने अधिकार में करने और उस पर शासन करने के झूठे दम्भ से बढ़कर कुछ न होगा।

और अगर कोई परीक्षण करने वाला बाहरी और इस कारण सीमित स्रष्टा पशु के कष्टमय जीवन का और मनुष्य के घपलेबाज और इस विशाल परंतु मुख्यतया अप्रयुक्त विश्व का आविष्कारक होता हो तो कोई कारण नहीं कि वह अपने प्राणियों में मानसिक बुद्धि की रचना करके, अपने परिश्रम की कठिन पटुता से संतुष्ट होकर रुक जाता क्योंकि यह भय तो होता कि उसका रचा हुआ प्राणी बनाने वाले के स्तर के बहुत नजदीक न पहुँच जाय।

परंतु यदि वस्तुओं का सत्य यही है कि एक अनंत आत्मा, एक शाश्वत

भागवत उपस्थिति और चेतना और शक्ति और आनंद अन्तर्लीन होकर यहाँ छिपे हुए हैं और धीरे-धीरे उभर रहे हैं तो यह अनिवार्य है कि उसकी शक्तियाँ या उसकी एक शक्ति से वे ऊपर उठते हुए स्तर, एक के बाद एक उभरते जायें, यहाँ तक कि संपूर्ण महिमा अभिव्यक्त हो जाय, एक महान् दिव्य तथ्य, दृश्य और गतिशील रूप में मूर्तिमान् हो।

वस्तुओं की प्रकृति के बारे में सभी मानसिक विचार हमारी अपर्याप्त तर्कबुद्धि में अनिश्चयात्मक मनन हैं जब वह अपने सीमित प्रकाश और अज्ञान भरी आत्म-निर्भरता में उस वैश्व व्यवस्था की न्यायसंगत संभाव्यताओं को तोलने का प्रयास करती है जो उसके समस्त चिंतन और शोध के बावजूद धुंधली बनी रहती है और अब भी एक पहेली है। हमारी विकसित होती हुई चेतना ही सच्चा साक्षी और अन्वेषक है क्योंकि वह चेतना स्वयं विकसनशील भगवान् का चिह्न और उनकी शक्ति है और विश्व की प्रतीयमान भौतिक निश्चेतना में से उसका विकास पृथ्वी के लंबे इतिहास की मौलिक, एकमात्र स्थायी, प्रगतिशील सूचक घटना है।

जब यह विकसनशील चेतना अपनी भरपूर दिव्य शक्ति में विकसित हो जायेगी, केवल तभी हम अपने-आपको और जगत् को उसके अपर्याप्त ज्ञान के चित्र के पुछल्लों और पट्टियों को पकड़ने की जगह सीधा जान सकेंगे। चेतना की यह पूर्ण शक्ति अतिमानस या विज्ञान है।

अतिमानस इसलिये कि उस तक पहुँचने के लिये हमें मन से मुड़कर उसके परे जाना होता है जैसे स्वयं मन, प्राण और निश्चेतन भौतिक तत्त्व से मुड़कर आगे बढ़ा था। विज्ञान इसलिये कि वह शाश्वत रूप में आत्मनिष्ठ है और अपने पदार्थ तथा स्वभाव में वह ज्ञान का क्रियाशील पदार्थ है।

हमारी तर्क बुद्धि, वस्तुओं के सच्चे ज्ञान से वंचित है क्योंकि वह हमारी आत्मा की सबसे बड़ी तात्त्विक शक्ति नहीं है बल्कि केवल एक सामयिक और मध्यवर्ती यंत्र है जिसके काम है वस्तुओं के रूप-रंग और प्रपंचात्मक प्रक्रिया से निबटना। सच्चा ज्ञान तभी शुरू होता है जब हमारी चेतना मनुष्य में अपनी वर्तमान सामान्य सीमा के पार चली जाय क्योंकि तब वह अपने-आप और जगत् में दिव्य शक्ति के बारे में प्रत्यक्ष अभिज्ञता पाती है और कम-से-कम तादात्म्य द्वारा ज्ञान का प्रारंभिक रूप पा लेती है, सच्चा एकमात्र ज्ञान तो वही है। इसके बाद वह जानती और देखती है। बाहरी सामग्री को लेकर तर्कबुद्धि द्वारा टटोलती नहीं फिरती।

वह सदा बढ़ती हुई, हमेशा अधिकाधिक प्रकाशमान, आत्मप्रदीप्त और सर्व प्रदीपक अनुभूति से जानती है। अंत में वह भगवान् का जगत् में अपने-आपको प्रकट करने वाला एक सचेतन भाग बन जायेगी। उसका जीवन भौतिक विश्व में अभी तक अनभिव्यक्त अंतर्लीन भगवान् के सचेतन विकास की शक्ति बन जायेगा।

मानव जाति में वह विकास शुरू हो गया है जिसकी श्री अरविन्द ने अनुभूति की थी। समर्थ सद्गुरुदेव की सिद्धयोग की आराधना से मनुष्य मात्र में वह बदलाव आना शुरू हो गया है। मानव से अतिमानव की ओर यात्रा के लिए साधक को सत्पथ पर चलना होगा, तभी विकास संभव है। तभी पार्थिव अमरत्व की प्राप्ति होगी।

-संपादक

जो अंत तक धीरज धरे रहेगा, उसी का 'उद्धार' होगा

www.the-comforter.org

विश्व भर के यहूदियों ने जो इस बाइबल पर विश्वास करते हैं, अभी तक किसी को स्वीकार नहीं किया। परन्तु आज भी उनकी मान्यता है कि वह अपनी बात के अनुसार अवश्य आवेगा। क्योंकि वह पवित्रात्मा छाती ठोक-ठोक कर कह गया है कि –''आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे परन्तु मेरी बातें कभी नहीं टलेंगी।'' अतः इस ग्रंथ के मानने वाले मनीषियों को विश्व की कोई भी शक्ति भ्रमित और गुमराह नहीं कर सकती है। ये अच्छी प्रकार से समझते हैं कि उस सहायक के आने का क्या अर्थ होता है। इस संबंध में उस पवित्रात्मा ने सैंट मैथ्यू के 21:11 से 14 एवं 34 से 36 में स्पष्ट दिशा-निर्देश दिया है–

''और बहुत से झूठे भविष्यवक्ता उठ खड़े होंगे, और बहुतों को भरमाएंगे। और अधर्म के बढ़ने से बहुतों का प्रेम ठंडा हो जाएगा। परन्तु जो अंत तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा। और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत् में प्रचार किया जाएगा कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अंत आ जाएगा।'' 24:34 से 36 –''मैं तुम से सच कहता हूँ कि, जब तक ये सब बातें पूरी न हो ले, तब तक यह पीढ़ी जाती न रहेगी। आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी नहीं टलेंगी। उस दिन और उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत, और न पुत्र परन्तु केवल पिता।''

–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

संदर्भ–'पवित्र ग्रंथ बाइबल की भविष्यवाणियाँ' पुस्तक से

एक व्यक्ति का दिव्य रूपान्तरण

यह अनिवार्य है कि एक मनुष्य इस कार्य (दिव्य रूपान्तरण) को एक ही जीवन में पूरा करे-श्री अरविन्द

वस्तुतः जब वह (रूपान्तरण) हो जायेगा तभी यह बताना संभव होगा कि वह क्या है? श्री अरविन्द के शब्दों में वह अज्ञात के अंदर एक साहसिक उत्क्रमण (Bold Reversal) है। इस नवीन सृष्टि के आगे हमारी दशा कुछ-कुछ आदिकालीन नरवानर की सी है। अतः हम अब से विकास की केवल कुछ साधारण रेखाओं का, अथवा कहना चाहिए कठिनाइयों का निर्देश भर कर सकते हैं, किन्तु निश्चित रूप से यह जाने बिना ही कि वास्तव में प्रक्रिया यही है । अभी प्रयोग जारी है।

एक बार जब यह, केवल एक बार, किसी एक भी मनुष्य के अंदर सफल हो जायेगा, तब रूपांतर की शर्तें तक बदल जायेंगी, क्योंकि मार्ग बन चुका होगा. अंकित हो चुका होगा, प्रारंभिक कठिनाइयाँ साफ हो चुकी होंगी। जिस दिन प्लैटो ने फैड्रस की अपने अंदर कल्पना की थी, उसी दिन उसने संपूर्ण मानव-जाति को फैड्रस की संभावना तक ऊपर उठा दिया था। जिस दिन कोई मनुष्य रूपांतर की कठिनाइयों पर विजय पायेगा, उस दिन सकल मानव-जाति को एक ज्योतिर्मय जीवन की, सत्य-अमर जीवन की संभावना में ऊँचा उठा लेगा।

-श्री अरविन्द

www.the-comforter.org

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342001

संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595, **YouTube:Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY**

Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

How does spiritual consciousness spread?

Spiritual consciousness spreads by the efforts of divine power. Effort by human mind is not going to be successful in this. Human effort can maximum be described as publicity with the help of scientific equipments. On the basis of his knowledge and power, man can publicize spirituality for a long time. He can gather lakhs of people continuously by physical means. But any such kind of movement doesn't leave any kind of effect after it is over. People turned away when countless such movements didn't yield any result. When the number of such people increased, they got the courage to revolt and an open revolt started against the religious teachers.

Whatever is left with religious teachers of this era, they are not in a position to give anything beyond that. In order to control this ever-deteriorating situation, the religious teachers of this era tried to supress the revolt through arguments, show off, money. The more the religious teachers tried to gain control, the more the situation got out of hand. They were not left with anything apart from few men and women. They also stayed behind to save themselves due to the fear of their actions in their lifetime. These powerless and helpless people, who are fearful of their own image are in no position to do anything. Religious teachers also know very well that they are being eaten up by the fear of plundering others by injustice and atrocity all their life. Understanding their weakness very well, religious teachers are trying to save themselves by explaining to them about sacrifice, penance, charity, sin etc. according to their own understanding.

The power to create is there in the rising sun. That's why the people of the world salute the rising sun, nobody salutes the sun when it is about to set. For how long can the helpless and powerless people of this era remain alive on the support of this setting sun is very clear. The way a person who is drowning cannot be saved by the support of a straw, in the same way this paper boat will sink. It is impossible to save it. History is witness to the fact that waning of every power is a sign of emerging of a new power. The man of this era doesn't believe in a system which doesn't yield any result. If God is there then after contacting him and by prayers, result should definitely come.

In the absence of any result, two questions arise in our mind- either there is no such power called GOD and if it is there then our message is not reaching HIM since all our saints have told us that GOD is extremely merciful and all the religious scriptures are full of examples of God's kindness.

We see that there is no response to our prayers by the methods prevalent in this era. This means that our request letters do not have the right address on it. If the address would have been correct then reply would have come definitely. So, if the people of this era want to find that Supreme Power then it is very important to know the right address. Physical science has achieved its higher state and power by such a search and in the same way Spiritual science can also reach its highest state.

www.the-comforter.org
www.the-comforter.org

Now the time has come that the Supreme Power by revealing itself and by controlling the physical science that has actually been revealed by it, establish its kingdom of peace and happiness in the world. Till that Supreme Power reveals itself and governs its powers that have been revealed by it, it is impossible to establish peace and happiness in the world.

At this moment, all the achievements of physical science are under the control of demonic powers. The qualities of demonic tendencies are violence, hatred, envy and destruction. A lot of effort has been made through these powers hoping for creation but in its place, it is always destruction that has been making progress. From the beginning of this century, many political leaders tried to bring peace but they have failed completely. The first world war spread massive massacre and unrest in the world. The entire world was in turmoil and terrorized. Then the Heads of States of physically prosperous nations founded League of Nations in order to bring peace in the world.

This effort also failed and the second world war was more gruesome than the first one. Then United Nations Organisation (UNO) was founded in an effort to bring peace. But we can see that UNO also has completely failed to bring peace.

There is not a single moment in the world when the physical science has stopped massacre. For years, in some or the other parts of the world massacre and war has been going on. All the efforts made by the highest powers of the world are failing. Now the massacre has started in all the fields of the world. Day and night more destruction is being caused in the world than in the first two world wars. All external intellectual efforts have failed because peace comes from within. Peace has its relation with the heart.

So, without connecting with the Supreme Power from within by introverted prayer, peace is impossible.What development has occurred within me and my Gurudev is giving clear results in spiritual and physical world. All the people associated with me are receiving that supreme bliss and peace which the different saints have called as "Naam khumari" (intoxication of Gods' name) or "Naam Amal". Me and my Gurudev have ascended up to an extent that people who are connecting with me to travel on the same path are not experiencing any problems.

While ascending they are having direct experience of different strange "Lokas" which is filling them with extreme bliss. From 'Mooladhaar' till 'Agam Lok' where they have reached, they are directly experiencing everything that has been described by our sages. Along with this any event related to subtle and causal body is being foretold by the spiritual

www.the-comforter.org

powers and all are getting materialised in the physical world as foretold. With this the knowledge of the soul existing within these two bodies that has been told by our sages and the clear signs of which I have already seen is being directly experienced by my disciples.

Whatever Spiritual knowledge was being considered as myth or imaginary by the people of physical world is now being established as truth with countless proofs. All the powers of the world of Maya (Illusion) from 'Mooladhaar till 'Agyachakra' with its three attributes (Brahma,Vishnu, Mahesh) is being experienced directly. All these powers are being verified in physical world too.

The world beyond 'Agyachakra' is completely 'saatvik' (pure and virtuous) and here the form of the word is constantly getting transformed into subtle form. So, the direct experiences one gets here cannot be completely expressed in human languages. In spite of all efforts, everyone is forced to say that whatever they are seeing or listening or experiencing they are finding themselves incapable of expressing it in a language. People have asked me many times if it will ever be possible to express these mysterious experiences in a human language?

I always give them the same reply that I had already told them in the beginning that spiritual

knowledge is a subject of direct experience and self realisation. Human intellect and knowledge are not in a position to assist in any way in this. This is the only reason that I never gave any instructions and never suggested any rituals or outward form of worship. I always said that it is only by love, surrender, kindness, pure intentions that one can get something in this world. This knowledge cannot be achieved by worldly opulence.Physical might (Bhowtiksatta) is a very minute dependent power. I can see that one who pierces through the three types of body and sees the light of soul even for a second gets the knowledge of previous life. This way the more intimate connection one has with the soul, the more it is possible to have knowledge of previous many lives accordingly. This way the principle of reincarnation in our religion can also be physically verified through this. Today whatever is happening through me, is due to the grace of God and blessings of my Gurudev. Clear instructions for all the key activities of my life from the beginning till the end has been given by that supreme power. I am completely confident and assured with the proofs. Apart from this that supreme power is completely guiding me at every step on my path. The same 'saatvik'(pure) current starts running spontaneously in the seekers who get associated with the people who are connected with me.

-Gurudev Shri Ramalal Ji Siyag

5th March' 1988

www.the-comforter.org

पूर्व निश्चित व्यवस्था

''मुझे उस परमसत्ता ने बहुत से प्रमाण देकर, अच्छी प्रकार समझा दिया है कि ''संसार के हर परिवर्तन और माध्यम की व्यवस्था पूर्व निश्चित है, उसमें रत्ती भर का भी परिवर्तन असम्भव है।''

पश्चिमी जगत् ने जो भौतिक प्रगति की है, उसे जब तक आध्यात्मिक सत्ता के अधीन नहीं कर लिया जाता है, संसार में शान्ति असम्भव है। श्री अरविन्द ने स्पष्ट कहा है :- ''हम देशों और जातियों के पृथक् व्यक्तित्व को मिटाना नहीं चाहते, बल्कि उनके बीच से घृणा, द्वेष और गलतफहमियों की बाधाओं को हटाना चाहते हैं।''

–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

भारतीय योगदर्शन का मूल उद्देश्य मुक्ति है

मैं जिस दिव्य विज्ञान के प्रसार-प्रचार के लिए निकला हूँ, विश्व उसे अभी पूर्व-पश्चिम के मेल की संज्ञा दे रहा है। क्योंकि मानव जाति का विकास इसी स्तर तक हुआ है। परन्तु भारतीय दर्शन आकाश और पृथ्वी के मिलन की बात करता है। पश्चिमी संस्कृति को इस दिव्य ज्ञान की जानकारी बिलकुल भी नहीं है।

भारतीय योगदर्शन का मूल उद्देश्य मोक्ष है। परन्तु आज, सम्पूर्ण संसार में योग का उद्देश्य मात्र रोग मुक्ति रह गया है। नित्य नये-नये रोग पैदा हो रहे हैं। क्योंकि भारतीय संस्कृति 'योग' पर एकाधिकार माँगती है और रखती भी है। परन्तु मानवता में उसे मूर्तरूप नहीं दे पा रही है। केवल शारीरिक कसरत को ही योग की संज्ञा दे रहे हैं। इसके विरोध को, पश्चिम की साजिश कह कर अपना बचाव करने का प्रयास कर रहे हैं। अपना बचाव कर पाएँगे, संभव नहीं लगता।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

14.6.2006, ए.वी.एस.के.जोधपुर

शर्म, संकोच और हठधर्मीता की आखिर नहीं चल सकी।

मैं प्रारम्भ में ही स्पष्ट कर चुका हूँ कि मैंने कभी किसी धार्मिक ग्रन्थ का अध्ययन नहीं किया। मुझे जो कुछ भी प्राप्त हुआ, उसमें किसी प्रकार का मानवीय प्रयास या बुद्धि का लेशमात्र भी सहयोग नहीं रहा। अनायास सब कुछ मिलता ही गया।

इस युग का मानव अचम्भा करता है कि बिना प्रयास और बिना इच्छा के ऐसा कैसे सम्भव है? परन्तु यह एक सच्चाई है। विभिन प्रकार की शक्तियाँ और सिद्धियाँ आती गई, परन्तु मुझे किसी अदृश्य शक्ति ने तनिक भी उनकी तरफ आकर्षित नहीं होने दिया।

इसी दौरान त्रिगुण मयी माया (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) से साक्षात्कार हुआ। प्रथम व्यक्ति आगे सीधा चल रहा था, वह अप्रभावित सीधा चलता हुआ मेरे सामने से गुजर गया। उसके बारे में मुझे विश्वकर्मा की अनुभूति करवाई गई। दूसरे नम्बर पर चलने वाला व्यक्ति बहुत चंचल था। उसका हर अंग निरन्तर गतिमान था। क्षण भर में वह सब दिशाओं में देख लेता था। उसके बारे में मुझे नारायण की अनुभूति करवाई गई। इतने में तीसरा व्यक्ति यह कहता हुआ भागता आया कि "सब को मार आया।"

उस समय वे तीनों ठीक मेरे सामने से गुजर रहे थे। बीच वाले व्यक्ति ने कहा मैं बताऊँ उसे मार सकते हो क्या? उसने कहा हाँ। इस पर उसने मेरी तरफ इशारा कर दिया। वे तीनों दक्षिण से उत्तर की तरफ जा रहे थे और मैं बांई तरफ (पश्चिम) पूर्व की तरफ मुँह किये रास्ते के किनारे थोड़ी दूरी पर खड़ा था। तीसरा व्यक्ति मेरी तरफ देखे बिना ही मेरी तरफ चल दिया। दो चार कदम आगे बढ़ कर ज्यों ही उसने मेरी तरफ देखा, संकोचवश शर्मिन्दा हो कर ठिठक कर खड़ा हो गया और दूसरे नम्बर वाले व्यक्ति से बोला, "इनकी तो मैं बहुत इज्जत करता हूँ, इन्हें कैसे मार सकता हूँ।" उसने जो कुछ कहा उसका ऐसा ही कुछ भाव था। इस पर दूसरे व्यक्ति ने उसे मजाक के रूप में शर्मिन्दा किया और तीनों चले गए।

इस प्रकार 'अगम लोक' तक की सभी शक्तियों से साक्षात्कार और प्रत्यक्षानुभूतियाँ निरन्तर होती ही चली गईं। एक संत मत को मानने वाला बुढ्ढा व्यक्ति, जहाँ मैं काम करता था, मेरी सीट के पास आकर बैठ जाता और इस प्रकार की अनुभूतियाँ बड़ी दिलचस्पी से पूछता रहता था।

एक बार आराधना के दौरान किसी व्यक्ति ने कह दिया कि गीता का हर श्लोक स्वयं सिद्ध मंत्र है। उसे सिद्ध करने की जरूरत नहीं। उसका जप तत्काल चमत्कार दिखाता है।

इस पर मैंने गीता के 11वें अध्याय का 38,39,40 वें श्लोकों (तीनों का) जप प्रारम्भ कर दिया। कुछ ही दिनों में एक हृष्ट पुष्ट नौ जवान मेरे सामने प्रातः 5 बजे, जब मैं अर्द्ध जाग्रत अवस्था में, आँख बन्द किये लेटा हुआ था तो हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया। मैं उसे जानता नहीं था इसलिए पूछा तुम कौन हो? उसने कहा 'सोअहम्', मुझे सुनाई दिया सोहन। क्योंकि मैं समझा इसका नाम सोहन है, अतः अपना नाम बताया है। मैंने कहा भाई मैं तो तुम्हें नहीं जानता, क्यों आये हो? उसने कहा आपने बुलाया है। मैंने उसे कहा तुम्हें किसी ने गलत कह दिया है, मैं तुम्हें जानता ही नहीं, मेरा तुमसे काम क्या हो सकता है? तुम चले जाओ। इस पर वह

चला गया।

आगे चल कर मुझे सोअहम के बारे में बताया गया तो मैं समझा कि वह कोई सोहन नहीं था। इस सम्बन्ध में उस संत मत के बुजुर्ग व्यक्ति से मैंने जब पूरी जानकारी ली तो मुझे बहुत ही आश्चर्य हुआ।

''मैं गहरे विचार में कई दिन डूबा रहा कि शिव प्राणी मात्र का संहार करता है फिर मुझको क्यों नहीं मार सकता है? आखिर मैं क्या हूँ, कौन हूँ?''

एक बार कई दिनों के लिए, मैं गाँव गया हुआ था। यह विचार उस समय बहुत गहराई तक पहुँच गया। एक दिन मेरा छोटा पुत्र 'यूहन्ना' नामक छोटी पुस्तक कहीं से उठा लाया। कोई काम न होने से उसे पढ़ने लग गया। उस ईसाईयों की पुस्तक में बहुत आनन्द आया। मैं नहीं समझ सका, इसमें ऐसी क्या बात है? जो मुझे इतना प्रभावित कर रही हैं परन्तु मुझे मेरे प्रश्न का उत्तर मिल गया।

पुस्तक का वह अंश जो मेरा उत्तर था उसके नीचे मैंने लाइनें खींच दी। मैं इस उत्तर से भारी अचम्भे में पड़ गया। शर्म और संकोच के कारण मैंने आज तक इस बात को किसी को कहा नहीं।

इसके पहले भी मुझे विदेशी लोगों से सम्पर्क के दृश्य दिखाये जाते थे और वह क्रम आज भी जारी है। वाशिंगटन यूनिवर्सिटी को लिखा पत्र इसी का कारण हैं परन्तु उस पत्र में भी मैंने वस्तु स्थिति का वर्णन मात्र करने का प्रयास किया है, संकोचवश इस संदर्भ में एक शब्द भी नहीं लिखा। यूहन्ना नामक उस छोटी पुस्तक का वह अंश जो मेरे प्रश्न का उत्तर था इस प्रकार है :-

''पिता की ओर से मैं तुम्हारे पास एक सहायक भेजूँगा, सत्य का आत्मा, जिसका उद्गम पिता से है। जब वह सहायक आ जायेगा तब वह मेरे विषय में गवाही देगा। और तुम भी मेरे विषय

www.the-comforter.org

में गवाही दोगे क्योंकि तुम आरम्भ से मेरे साथ हो।''

''मैं तुम्हें सच्चाई बताता हूँ- यह तुम्हारे लिए लाभदायक है कि मैं तुम्हें छोड़ कर जा रहा हूँ। यदि मैं न जाऊँ तो वह सहायक तुम्हारे पास नहीं आएगा। पर यदि मै जाऊँ तो उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा। जब वह आ जायेगा तो वह संसार को पाप, धार्मिकता और न्याय के विषय में दोषी ठहराएगा। पाप के विषय में इसलिए कि इस संसार के लोगों ने मुझ पर विश्वास नहीं किया। धार्मिकता के विषय में इसलिए कि मैं पिता के पास जा रहा हूँ और तुम मुझे फिर न देखोगे। न्याय के विषय में इसलिए कि इस संसार का शासक दोषी ठहराया गया है।''

''मुझे तुम से और भी बहुत बातें कहनी है, पर अभी तुम उन्हें सहन नहीं कर सकोगे। जब वह सत्य का आत्मा, आएगा तब वह सम्पूर्ण सत्य में तुम्हारा मार्ग दर्शन करेगा। वह अपनी ओर से कुछ नहीं कहेगा। जो बातें वह सुनेगा, वही कहेगा। वह होने वाली घटनाओं के विषय में तुम्हें बताएगा। वह मेरी महिमा करेगा क्योंकि वह मेरी बातें ग्रहण करेगा और तुम्हें बताएगा। जो पिता का है वह मेरा है, इसलिए मैंने कहा कि आत्मा मेरी बातें ग्रहण करेगा और तुम्हें बताएगा।''

इस बात को संकोचवश मैं आज तक नहीं कर सका और यहीं अध्यात्म जगत् में कार्य करना आरम्भ कर दिया। परन्तु मुझे बताया गया था कि मुझे यहाँ सफलता नहीं मिलेगी। उसी छोटी पुस्तक यूहन्ना में इस संदर्भ में यीशु ने स्वयं एक बात कही थी, उसकी तरफ इंगित करके मुझे समझाया गया। ''यीशु ने स्वयं यह साक्षी दी थी कि एक नबी का आदर उसकी मातृभूमि में नहीं होता।'' परन्तु मैंने हठधर्मीता से यही काम प्रारम्भ कर दिया। पूरे प्रयास के बावजूद मैं सफल नहीं हो सका। मुझे असफलता की आशंका पहले से थी, और इस संदर्भ में बता भी दिया गया था, परन्तु संकोचवश मैं इसे किसी के

सामने प्रकट नहीं कर सका।

समय बहुत थोड़ा है और कार्यभार बहुत अधिक सौंपा गया है। यह सार्वभौम कार्य है। मानव मात्र का इससे सम्बन्ध है। केवल भारत ही इसका अधिकारी नहीं हैं। मेरा सोचना गलत था, असफलता मिलना गलत नहीं है। मैं तथा मुझसे आध्यात्मिक दृष्टि से जुड़े लोग जिस आनन्द की अनुभूति करते हैं, उसके बारे में यीशु के शिष्य यूहन्ना ने कहा है :- "यह एक आन्तरिक आनन्द है, जो सभी सच्चे विश्वासियों के हृदय में आता है। यह आनन्द हृदय में बना रहता है, सांसारिक आनन्द के समान यह आता जाता नहीं हैं, उसका आनन्द पूर्ण है, वह हमारे हृदयों के कटोरों को आनन्द से तब तक भरता है, जब तक उमड़ न जाय।"

उपर्युक्त तथ्य मुझे बहुत प्रभावित कर रहे हैं। भौतिक जगत् में इस एक रास्ते के अलावा सभी रास्ते बन्द कर दिये हैं। अतः अब मैंने संकोच और शर्म को छोड़कर संसार के सामने स्पष्ट रूप से प्रकट होने का फैसला कर लिया है। वह परम सत्ता चाहती है तो मैं उसे कैसे रोक सकता हूँ? मेरी हठधर्मीता चलेगी नहीं। अतः मैं पूर्ण रूप से समर्पित होकर हर आदेश का पालन करने को तैयार हो गया हूँ। अब यथा शीघ्र पश्चिमी जगत् के देशों से सम्पर्क करने के प्रयास करूँगा।

मुझे समझाया जा रहा है कि संसार के लोग बड़ी ही उत्सुकता से इन्तजार कर रहे हैं। मात्र संदेश पहुँचने की देर है। इसका आभास तो लोगों को बहुत पहले से होने लगा था। संसार के कई संत इस संदर्भ में भविष्यवाणी कर चुके हैं।

संसार के साथ-साथ मैं चाहता हूँ कि इसका प्रचार-प्रसार भारत में भी हो। क्योंकि मेरा शरीर इसी पवित्र मिट्टी से बना है। मुझे महर्षि अरविन्द की यह भविष्यवाणी बहुत अधिक प्रभावित कर रही है "क्रम विकास में अगला कदम जो मनुष्य को एक उच्चतर और विशालतर चेतना में उठा ले जायेगा और उन समस्याओं का हल करना प्रारम्भ कर देगा, जिन समस्याओं ने मनुष्य को तभी से हैरान और परेशान कर रखा है, जब से उसने वैयक्तिक पूर्णता और पूर्ण समाज के विषय में सोचना विचारना शुरू किया था।

इसका प्रारम्भ भारत ही कर सकता है और यद्यपि इसका क्षेत्रफल सार्वभौम होगा तथापि केन्द्रीय आन्दोलन भारत ही करेगा।" इसके अतिरिक्त श्री अरविन्द की यह भविष्यवाणी बिल्कुल सत्य है:-

"24 नवम्बर 1926 को श्रीकृष्ण का पृथ्वी पर अवतरण हुआ था। श्रीकृष्ण अतिमानसिक प्रकाश नहीं हैं। श्रीकृष्ण के अवतरण का अर्थ है अधिमानसिक देव का अवतरण जो जगत् को अतिमानस और आनन्द के लिए तैयार करता है। श्रीकृष्ण आनन्दमय है। वे अतिमानस को अपने आनन्द की ओर उद्‌बुद्ध करके विकास का समर्थन और संचालन करते हैं।"

गीता के अक्षय आनन्द को संतों ने 'नाम खुमारी' और 'नाम अमल' की संज्ञा दी है।

"मेरे गुरुदेव ने उस "अक्षय आनन्द" को पृथ्वी पर लाकर संसार के प्राणियों में बाँटने का कार्य मुझे सौंपा है। उसको अब मैंने निसंकोच विश्वभर में बाँटने का फैसला कर लिया है।"

भारत के निर्धन लोग रोटी कपड़े के चक्कर से निकले तो इस तरफ ध्यान जाय! लम्बी गुलामी ने भी लोगों को भारी गुमराह कर दिया है। इस प्रकाश के संसार में फैलते ही विश्व भारत की तरफ आकर्षित होगा और क्रमिक विकास की गति से शीघ्र उन्नति के शिखर पर पहुँच जायेगा, क्योंकि ऐसी स्थिति में संसार की सारी शक्तियाँ उत्थान में पूर्ण सहयोग देने लगेंगी।

-समर्थ सद्‌गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग
15.6.1988

www.the-comforter.org

ईश्वर का ध्यान

एक धर्मपरायण स्त्री थी। उसका नाम पार्वती था। अपना हर काम वह ईश्वर को याद करते हुए करती थी। गरीबों की मदद करने में हमेशा आगे रहती थी। जितना संभव होता वह दान-दक्षिणा भी खूब देती थी। अपने पति से भी जब वह ईश्वर का नाम लेने को कहती तो वह कहता कि वह बुढ़ापे में फुर्सत से भगवान् का ध्यान करेगा और दान-दक्षिणा भी देगा।

इस बात पर कभी-कभी पार्वती और उसके पति मे बहस भी हो जाती थी। एक दिन पार्वती ने अपने पति से फिर कहा, 'देखो, हमें नही पता कि हमारी जिंदगी कितने दिन की है, इसलिए आप भगवान की पूजा-ध्यान बुढ़ापे में नहीं जब भी समय मिले कीजिए।' इस पर पार्वती के पति ने कहा, 'भगवान् की पूजा ध्यान में रमूंगा तो घर कौन चलाएगा? यदि हमारे पास धन-संपत्ति नहीं होगी तो हमें कोई नहीं पूछेगा। जीने के लिए भौतिक साधनों की आवश्यकता पड़ती हैं और उन्हें जुटाने के लिए मेहनत करनी पड़ती है। तुम हमेशा भगवान् का नाम जपती रहती हो क्या कभी भगवान ने थाली परोस कर तुम्हारे सामने रखी है? कुछ दिनों बाद पार्वती का पति अचानक बीमार पड़ गया। वह उसे लेकर वैद्य के पास गई। वैद्य ने उसे सुबह, दोपहर और शाम को पीने के लिए दवा दी। पार्वती ने वह दवा एक अलमारी में रख दी। सुबह से शाम हो गई, पर पार्वती ने दवा अपने पति को नहीं दी। पति ने सोचा कि शायद उसकी पत्नी दवा देना भूल गई है, उसने दवा माँगी तो पर्वती ने कहा, 'कोई बात नहीं, तीनों समय की दवा एक साथ पी लो।' पति को इस बात पर क्रोध आ गया। वह बोला, 'औषधि लेने का भी तरीका होता है, एक साथ दवा पीने से बीमारी ठीक नहीं होती वह तो खुराक के हिसाब से धीरे-धीरे पीने से ही ठीक होती है।'

अपने पति की बात सुनकर पार्वती बोली, 'ठीक कहा आपने। हम सब भवरोग से पीड़ित हैं, इसके उपचार के लिए हमें हर रोज दवा के रूप में भगवान् का स्मरण और सत्कर्म करने चाहिए। रोग बढ़ जाने या मृत्यु निकट आ जाने पर एक साथ दवा लेने से कोई लाभ नहीं होगा।' पार्वती की बातों से पति की आँखें खुल गई। उस दिन से वह भगवान् का ध्यान करने लगा और अपनी पत्नी के साथ मिलकर लोगों की सेवा में जुट गया।

www.the-comforter.org

> माता-पिता हमें केवल जन्म ही देते हैं परंतु गुरु हमें मुक्ति -मार्ग दिखाते हैं। "हम गुरु की संतान हैं-उन के मानस पुत्र हैं।"
>
> -स्वामी विवेकानन्द साहित्य-7, मेरे गुरुदेव शीर्षक से

अवसाद पर विजय

''मानव जीवन के सबसे बड़े अभिशापों में से एक है-अवसाद (Depression) ।तमस्, दुःख , निराशा और निष्क्रियता इसके संगी-साथी हैं ।इन सब पर विजय पाने का एक उपाय है-आंतरिक शांति (Internal peace) को पाना ।''

समस्त अवसाद बुरा होता है क्योंकि वह चेतना को नीचे खींचता है, ऊर्जा को खर्च कर देता है और विरोधी शक्तियों के प्रति द्वार खोल देता है ।

- महर्षि श्री अरविन्द घोष (पाण्डिचेरी)

संदर्भ -'अवसाद पर विजय और आंतरिक शांति' पुस्तक से

संजीवनी मंत्र का सघन जप और नियमित ध्यान ही नीरव मन की गहरी नींव है । मंत्र जप और ध्यान से मन निर्मल हो जाता है ।सब प्रकार की मानसिक थकावट और मानसिक तनाव शांत हो जाता है ।इसलिए अपने अंतर्मन की गहरी शांति के लिए गुरुदेव से करुण प्रार्थना, सघन जप और नियमित ध्यान करते रहिए ।

गुरु कृपा का महाप्रसाद

"मेरे माध्यम से जो शक्ति प्रकट हो रही है, उसमें मेरी बुद्धि से किया हुआ कुछ भी प्रयास नहीं है। इस सम्बन्ध में मुझे किसी प्रकार का भ्रम नहीं है। जो कुछ हो रहा है, वह मेरे असंख्य गुरुओं की आराधना का फल है। मुझे मेरे परमदयालु संत सद्गुरुदेव की अहैतुकी कृपा के कारण यह सब अनायास ही प्राप्त हो गया।

मैं तो मात्र गुरु कृपा का प्रसाद बाँटने संसार में अकेला ही निकल पड़ा हूँ। मैं अच्छी प्रकार जानता हूँ कि मैं कर्ता नही हूँ। इसलिए मुझे किसी प्रकार की निराशा भी नहीं होती। घाटे-नफे का अधिकारी तो वही जगत् सेठ है, मैं तो मात्र अपनी मजदूरी का अधिकारी हूँ।"

–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

03-12-1988

एष धर्मः सनातनः
(यह सनातन धर्म है)

पूज्य सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग
Sadgurudev Shri Ramlal Ji Siyag

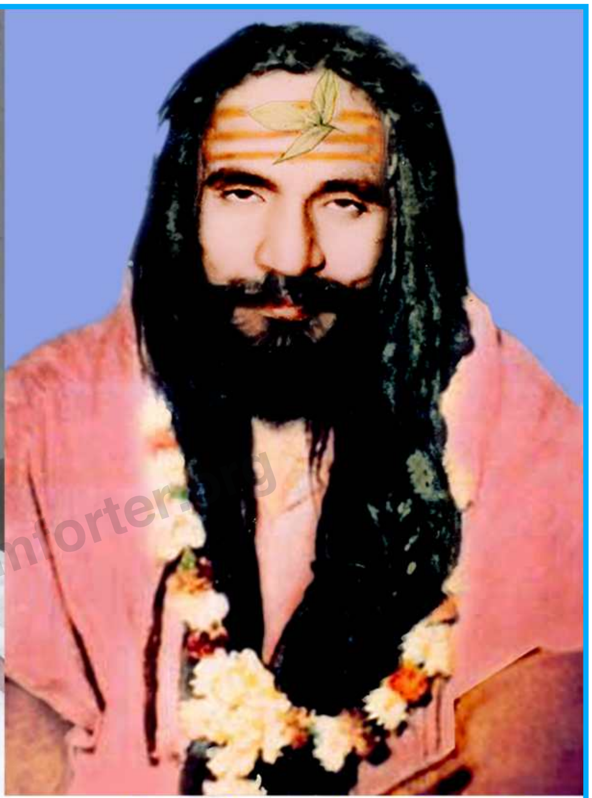

बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी(ब्रह्मलीन)
Baba Shri Gangai Nath Ji(Brahmleen)

''हिन्दू धर्म कोई संप्रदाय या कट्टरपंथी मत नहीं है, सूत्रों का गट्ठर नहीं है, सामाजिक नियमों की आचार संहिता भी नहीं है, बल्कि यह है एक शक्तिशाली, शाश्वत और सार्वभौमिक सत्य। इसने भगवान् की अनंतता के साथ तादात्म्य के अन्तिम दिव्य लक्ष्य के लिए मनुष्य की आत्मा को तैयार करने का रहस्य जान लिया है।''

–महर्षि श्री अरविन्द घोष

14 मार्च 1908

संदर्भ–पवित्र ग्रंथ बाइबल की भविष्यवाणियाँ' पुस्तक से

सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में अंतर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड, मनुष्य के शरीर में है।जब हमारे ऋषियों ने और गहन शोध किया तो पाया कि इस जगत् को रचने वाला सहस्रार में स्थित है और उसकी शक्ति मूलाधार में।इन दोनों के कारण ही संसार की रचना हुई है।

उस परम पुरुष की शक्ति, उसके आदेश से नीचे उतरती गई और अलग-अलग बंध लगाकर सभी लोकों की रचना करके मूलाधार में स्थित हो गई। इसके चेतन होकर उर्ध्वगमन करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही 'मोक्ष' है। मोक्ष की प्राप्ति जीते जी होती है।मरने के बाद मोक्ष की कल्पना करना, एक मृगमरीचिका ही है और कुछ नहीं।

गुरु-शिष्य परंपरा में जो शक्तिपात दीक्षा का विधान है, उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके ऊपर को चलाते हैं।गुरु का शक्ति पर पूर्ण प्रभुत्व होता है, इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है।क्योंकि यह सहस्रार में स्थित परमसत्ता की पराशक्ति है अतः यह मात्र उसी का ही आदेश मानती है।इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित उस परम तत्त्व की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में, एक समय में, मात्र एक ही व्यक्ति के माध्यम से कार्य करती है।क्योंकि यह सार्वभौम सत्ता है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

यह भारतीय दर्शन की विश्व को अभूतपूर्व एवं अद्वितीय देन है। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, प्रवृत्तिमार्गी परम श्रद्धेय समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी ब्रह्मलीन (जामसर) के आदेशानुसार इस दिव्य ज्ञान का महाप्रसाद बाँटने, विश्व में अकेले ही निकल पड़े हैं।

शक्तिपात से जब कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है तो उर्ध्वगमन करने लगती है। कई जन्मों के संस्कारों के कारण रास्ता अवरूद्ध रहता है। अतः साधक को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसेः- आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः ही होने लगते हैं। वह शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने अधीन कर लेती है।इस प्रकार जो क्रियाएँ होती हैं उन्हें साधक न तो स्वयं करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की। वह शक्ति सीधा अपने नियंत्रण में सभी क्रियाएँ स्वयं करवाती है।

गुरुदेव के अनुसार भौतिक विज्ञान के शोधकर्त्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान, इस ज्ञान से हो जाएगा।समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्ताओं को करवा देगी। इस प्रकार मनुष्य जाति की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

गुरु-शिष्य परंपरा में जिस सिद्धयोग अर्थात् महायोग का वर्णन है, उसके आदि गुरु कैलाशवासी भगवान् परशिव हैं। शिव से यह ज्ञान अमर कथा द्वारा महायोगी श्री मत्स्येन्द्र नाथ जी को मिला। उनके परम शिष्य महायोगी श्री गोरखनाथजी ने इस सिद्धयोग से संसार का जो कल्याण किया है, वह सर्वविदित है।यह योग संसार के त्रिविध तापों- आधि दैहिक, आधि भौतिक व आधि दैविक (Physical, Mental & Spiritual) का शमन (नाश) करता है। इसलिए संसार की कोई भी असाध्य बीमारी व विज्ञान सम्बधित समस्या नहीं है; जिसका सिद्धयोग में समाधान न हो। अर्थात् सिद्धयोग में सब कुछ संभव है, जो सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की शक्तिपात दीक्षा से मानवता में मूर्तरूप ले रहा है।

सिद्धयोग से लाभ-

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग से मंत्र दीक्षा प्राप्त करने के बाद, उनके चित्र का नियमित ध्यान एवं नाम जप द्वारा मातृशक्ति कुण्डलिनी के जागरण से साधक में निम्न परिवर्तन आ जाते हैं-

. सभी प्रकार के असाध्य रोगों जैसेः-एड्स, कैंसर, डायबिटीज, टी.बी., दमा, ब्लड प्रेशर, मिर्गी, बवासीर, हीमोफीलिया, हेपेटाइटिस व गठिया आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।

. सभी प्रकार के मानसिक रोगों जैसेः-तनाव, पागलपन, उन्माद, भय, चिंता, अनिद्रा आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।

. सभी प्रकार के नशों जैसेः- शराब, अफीम, हेरोइन, भांग, तम्बाकू (बीड़ी, सिगरेट व जर्दा) आदि से बिना किसी परेशानी के छुटकारा।

. विद्यार्थियों की एकाग्रता एवं याद्दाश्त में नाम जप व ध्यान द्वारा अभूतपूर्व वृद्धि।

. आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के समय प्रत्यक्ष देखना और सुनना।

. गृहस्थ जीवन में रहते हुए 'भोग एवं मोक्ष' दोनों तत्त्वों की सहज प्राप्ति।इसके साथ ही जीवन की समस्त सांसारिक परेशानियों से छुटकारा।

. ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार संभव।

www.the-comforter.org

जब गुरुदेव साथ हैं तो फिर गम की क्या बात है ?

जब गुरुदेव साथ हैं तो फिर गम की क्या बात है ?
बीत जाएगी ये काली अंधियारी रात
फिर नई खुशियों का सवेरा आएगा
चला जाएगा ये सूखा, अकाल
फिर नया मौसम हरियाली का आएगा
जब मैं चलूँगा प्रगति के पथ पर...
जब गुरुदेव साथ हैं तो फिर गम की क्या बात है ?

जब गुरुदेव साथ हैं तो फिर गम की क्या बात है ?
बहुत परेशानियाँ आएँगी मुझे रोकने
मेरे अंदर से, बाहर से और आस पास से।
मुझे पता है बहुत सारे दुःख हैं जीवन में
लेकिन सुख की अहमियत तभी समझ आयेगी,
जब मैं चलूँगा प्रगति के पथ पर...
जब गुरुदेव साथ हैं तो फिर गम की क्या बात है ?

www.the-comforter.org

जब गुरुदेव साथ हैं तो फिर गम की क्या बात है ?
मंजिल बहुत दूर है, समय बहुत लगेगा
लेकिन जीवन में हर्ष उल्लास का नया सूर्य उगेगा।
पार होगी हर सुनामी, चढूँगा मैं हर उँचाई
हे अनंत, हे सर्वशक्तिमान, हे सृष्टि निर्माता
अब मैं चलूँगा प्रगति पथ पर...
जब गुरुदेव साथ हैं तो फिर गम की क्या बात है ?

-महेन्द्र प्रजापत,
पुत्र श्री गोविन्द राम प्रजापत
गाँव-आरंग, तहसील-शिव
जिला-बाड़मेर (राज.)

मेरी सच्ची नियति क्या है ?

मेरी सच्ची नियति है–'भागवत चेतना' तक पहुँचना।

हम भागवत इच्छा को अभिव्यक्त करने के लिये ही धरती पर हैं।

–श्री अरविन्द की 'जीवन' पुस्तक से

भगवान् की कृपा में विश्वास

www.the-comforter.org

भगवान् की कृपा में अविचल भरोसे और विश्वास के साथ शांतिप्रिय और प्रशान्त रहकर ही तुम परिस्थितियों को उतना अच्छा होने देते हो जितना कि वे हो सकती हैं। भगवान् में-और केवल भगवान् में-जिन्होंने पूरी आस्था रखी है, उन्हीं के लिए सदैव सर्वाधिक सर्वोत्तम घटित होता है।

प्रत्येक क्षण वह सब जो अप्रत्याशित, अनपेक्षित, अज्ञात है, हमारे सामने है-और जो हमारे साथ होता है, वह अधिकतर हमारे विश्वास की गहनता एवं विशुद्धता पर निर्भर करता है।

-श्रीमां (श्री अरविन्द आश्रम, पाण्डिचेरी)

गतांक से आगे...

कठिनाई में...

योग के आधार

–महर्षि श्री अरविन्द

इस बात का कोई कारण नहीं कि तुम योग में सफलता पाने की आशा ही छोड़ दो। जिस अवसाद की अवस्था को तुम अभी अनुभव कर रहे हो वह क्षणिक है और वह एक-न-एक समय अत्यंत शक्तिशाली साधक पर भी आती है, यहाँ तक कि बार-बार आती है। ऐसे समय में बस आवश्यकता इस बात की है कि सत्ता का जो भाग जाग्रत हो गया है उसे दृढ़ता के साथ पकड़े रखा जाये, सभी विपरीत सूचनाओं का त्याग किया जाये और अपने लिये जितना संभव हो उतना अपने-आपको सत्य-शक्ति की ओर उद्घाटित रखते हुए तब तक प्रतीक्षा की जाये जब तक कि यह संकट या परिवर्तन का काल, जिसका कि यह अवसाद एक अवस्थामात्र है, समाप्त न हो जाये। तुम्हारे मन में जो सब सूचनाएँ आती हैं और तुमसे यह कहती हैं कि तुम योग्य

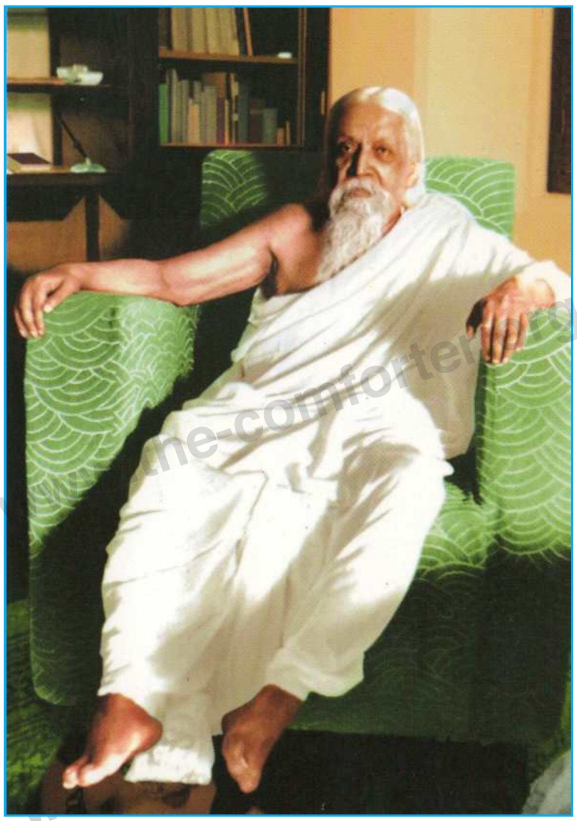

नहीं हो और तुम्हें साधारण जीवन-यापन करने के लिये वापस लौट जाना चाहिये, वे सब विरोधी शक्तियों से आने वाले सुझाव हैं। इस तरह के विचारों को निम्न प्रकृति की उपज समझकर उनका बराबर त्याग करते रहना चाहिये ; अगर ये विचार हमारे अज्ञानी मन को बाहर से देखने में सत्य के ऊपर प्रतिष्ठित हुए-से भी प्रतीत हों तो भी वे होते हैं मिथ्या ही, क्योंकि वे एक अस्थायी गतिधारा को अतिरंजित करते और उसे अंतिम और यथार्थ सत्य के रूप में हमारे सामने रखते हैं। तुम्हारे अंदर केवल एक ही सत्य है जिसे तुम्हें निरंतर पकड़े रखना होगा और वह है तुम्हारी दिव्य संभावनाओं का सत्य तथा ऊर्ध्वतर ज्योति के लिये तुम्हारी प्रकृति की पुकार। यदि तुम उसे सदा पकड़े रखोगे, अथवा, कभी-कभी तुम्हारा हाथ ढीला होने पर भी यदि तुम उसे फिर से पकड़ लिया करोगे,

क्रमशः अगले अंक में...

मानस की नीरवता

योग का प्रथम कार्य है, खुले में सांस लेना, और स्वभावतः मन के इस आवरण को, जो केवल एक ही प्रकार के स्पंदनों को छनकर आने देता है, भंग करना, ताकि हम स्पंदनों की बहुरंगी अनंतता को, अर्थात् संक्षेप में कहें तो इस संसार को और उसके सब प्राणियों को, उनके वास्तविक रूप में जानें, और अपने एक-दूसरे स्वयं के साथ परिचय प्राप्त करें, जिसकी महिमा का हमें अभी पूरा भान भी नहीं है।

योग की पहली मंजिल है-मानस की नीरवता। यही वह मूल कर्म है जो अनेक सिद्धियों की कुँजी प्रदान करता है। अब प्रश्न उठता है कि मानस की नीरवता क्यों हो? पर यह बिल्कुल स्पष्ट है कि यदि हम अपने अंदर एक नए देश की खोज करना चाहते हैं तो पुराने को पीछे छोड़ना जरूरी है। सब इस पर निर्भर करता है कि हम कितने दृढ़ संकल्प के साथ यह पहला कदम उठाते हैं।

कभी कभी केवल एक स्फुरण ही पर्याप्त हो जाता है और हमारे अंदर एक पुकार उठती है, 'बस, यह बकबक बहुत हो ली !' और मनुष्य सदा के लिए संलग्न हो जाता है। फिर वह आगे ही आगे बढ़ता है, पीछे मुड़कर नहीं देखता।दूसरे लोग हाँ-ना करते रहते हैं, और उनका दो लोकों के बीच डोलना कभी खत्म ही नहीं होता।

यह बात हम तुरंत स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि बड़े कष्टपूर्वक संचित वैभव की, भगवान् ही जाने किसी ज्ञान-शांति-आनंद के नाम पर बलि चढ़ा देने का प्रश्न यहाँ नहीं है (इस विषय में भी हम बड़ी-बड़ी बातों के धोखे में आने वाले नहीं हैं)। हम पवित्रता की नहीं बल्कि यौवन की-विकासमान जीव के शाश्वत यौवन की खोज कर रहे हैं।हम अब की अपेक्षा हीन नहीं बल्कि और उन्नत हो जाने के लिए विशेषतः बृहत्तर बनने के लिए प्रयत्न कर रहे हैं। श्री अरविन्द विनोदपूर्वक कहते थे-''क्या तुम्हारे दिमाग में कभी यह नहीं आया कि यदि वे प्रेम,प्रकाश और आनंद से विहीन किसी चीज को परम कल्याण के रूप में खोज रहे होते तो वे ऋषि नहीं, गधे हुए होते।

जब मानसिक चक्की चलनी बंद हो जाती है, तब सचमुच कई तरह की बातें पता चलती हैं, और पहली यह कि यदि विचार करने की शक्ति अद्भुत देन है तो विचार न करने की शक्ति उससे भी कहीं बढ़कर है। साधक केवल कुछ मिनट प्रयत्न करके देखें तो उस पता चल जाएगा कि उसका किसके साथ पाला पड़ा है ! वह देखेगा कि वह अदृश्य हलचल के मध्य रहता है, एक ऐसे बवंडर के अंदर जो उसे तो थका देता है पर खुद कभी थकता नहीं; वहाँ केवल उसके विचार, उसके भाव, उसके आवेग, उसकी प्रतिक्रियाएँ स्थान पाती हैं-वही, हमेशा वही, जो एक बड़ा भूत है जो सब में व्याप्त है, सब आवृत कर देता है, सिर्फ खुद की ही सुनता है, खुद को ही देखता है, खुद को ही जानता है (यह भी एक प्रश्न है)।

उसकी हमेशा वही बातें, वही प्रसंग हैं, जो थोड़ा घुमा-फिराकर नए का सा आभास दे पाते हैं। एक तरह से हम केवल मानसिक, स्नायविक और शारीरिक आदतों का एक जटिल पुँज भर हैं जो कुछेक प्रधान विचारों, इच्छाओं और संसर्गों के द्वारा जुड़ा रहता है-छोटी-छोटी पुनः पुनरावर्तनशील अनेक शक्तियों का एक संमिश्रण मात्र जिसके अंदर कुछ प्रमुख स्पंदन शामिल रहते हैं। यह कहना गलत न होगा कि अट्ठारह वर्ष की आयु तक हमारा जमाव हो चुकता है, हमारे मुख्य स्पंदनों की स्थापना हो चुकती है, और इन्हीं के इर्द-गिर्द उस सहस्रानना अनन्य शाश्वत वस्तु के, जिसे हम संस्कृति कहते हैं, अवशेष आकर अधिकाधिक घनी, परिष्कृत, सुसंस्कृत परतों में, निरंतर लिपटे चले जाते हैं-यही 'हम' स्वयं हैं।

संक्षेपतः हम एक रचना के अंदर बंद हैं चाहे वह लोहे की हो और उसमें कहीं कोई झरोखा तक न हो, अथवा वह मीनार की तरह सुंदर हो, फिर भी हम रहे तो बंदी ही, वही भिनभिनाते, उसी चक्र में फंसे हुए मनुष्य, चाहे ग्रेनाइट की चमड़ी में या शीशे की मूर्ति में।

योग का प्रथम कार्य है, खुले में सांस लेना, और स्वभावतः मन के इस आवरण को, जो केवल एक ही प्रकार के स्पंदनों को छनकर आने देता है, भंग करना, ताकि हम स्पंदनों की बहुरंगी अनंतता को, अर्थात् संक्षेप में कहें तो इस संसार को और उसके सब प्राणियों को, उनके वास्तविक रूप में जानें, और अपने एक-दूसरे स्वयं के साथ परिचय प्राप्त करें, जिसकी महिमा का हमें अभी पूरा भान भी नहीं है।

संदर्भः-'चेतना की अपूर्व यात्रा' पुस्तक से

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

वर्तमान भारत

पर धनवान होकर भी जो वैश्य, राजाओं की कौन कहे, राजकुटुम्बियों तक के सामने सदा भयभीत हो हाथ जोड़े खड़े रहते थे, उन्हीं में से कुछ लोगों का साथ मिलकर व्यापार करने की इच्छा से नदियाँ और समुद्र पार कर, यहाँ आना और अपनी बुद्धि और धन-बल से धीरे धीरे चिर प्रतिष्ठित हिन्दू-मुसलमान राजाओं को अपने हाथ की कठपुतलियाँ बना लेना, यही नहीं, धन के बल से अपने देश के राज-कुटुम्बियों तक से अपना दासत्व स्वीकार कराकर उनकी शूरता और विद्या-बल को धन उपार्जन करने का अपना साधन बना लेना, और जिस देश के महाकवि की दिव्य लेखनी द्वारा चित्रित गर्वित लॉर्ड एक साधारण व्यक्ति से कहता है कि 'दूर हो नीच !तू एक सरदार के पवित्र शरीर को छूने का साहस करता है !'- उसी देश के उन्हीं प्रतापी सरदारों के वंशजों का थोड़े ही समय में ईस्ट इण्डिया कम्पनी नाम के वणिक-दल के आज्ञाकारी दास बनकर भारत में आने को परम गौरव समझना भारतवासियों ने कभी नहीं देखा था।

सत्त्व, रज और तम आदि तीन गुणों के तारतम्य से ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि चार वर्ण उत्पन्न होते हैं और ये चारों वर्ण अनादि काल से सभी सभ्य समाज में विद्यमान हैं।काल-प्रभाव से और देश-भेद से किसी वर्ण की शक्तियाँ संख्या दूसरों की अपेक्षा बढ़ या घट सकती हैं, परन्तु संसार के इतिहास का अनुशीलन करने से प्रतीत होता है कि प्राकृतिक नियमों के वश ब्राह्मण आदि चारों वर्ण क्रम से पृथ्वी का भोग करेंगे।

चीनी, सुमेरी, बेबिलोनी, मिस्र, कैल्डियानिवासी, आर्य, ईरानी, यहूदी और अरबी आदि जातियों में समाज की बागडोर प्रथम युग में ब्राह्मण या पुरोहित के हाथ में थी।दूसरे युग में क्षत्रियों का अर्थात् राजकुल या एकाधिकारी राजाओं का अभ्युत्थान हुआ।मगर वैश्यों के या वाणिज्य से धनवान होनेवाले सम्प्रदाय के हाथों में समाज का शासन-सूत्र पहले-पहल इंग्लैण्ड-प्रमुख पाश्चात्य देशों में आया है।यद्यपि प्राचीन ट्रॉय और कार्थेज और उनकी अपेक्षा अर्वाचीन वेनिस और अन्य छोटे छोटे व्यापार करनेवाले देश बड़े ही प्रतापशाली हुए थे, तो भी वैश्यों का यथार्थ अभ्युत्थान इन देशों में नहीं हुआ था।

पुराने समय में राजघराने के लोग ही नौकरों और अन्य साधारण लोगों द्वारा व्यापार कराते थे और उसका लाभ स्वयं प्राप्त करते थे। इन इनेगिने मनुष्यों को छोड़कर दूसरे किसी को देश-शासन आदि के कामों में मुँह खोलने का अधिकार नहीं था।मिस्र आदि प्राचीन देशों में ब्राह्मण-शक्ति थोड़े ही समय तक प्रधान शक्ति रही। उसके बाद वह राज-शक्ति के अधीन और उसकी सहकारी बनकर रहने लगी। चीन में कन्फ्यूशस की प्रतिभा द्वारा गठी हुई राज-शक्ति ढाई हजार वर्षों से भी अधिक काल से पुरोहित शक्ति को अपनी इच्छानुसार चलाती आ रही है।गत दो सौ वर्षों से तिब्बत के सर्वग्रासी लामा लोग राजगुरु होकर भी सब प्रकार से चीनी सम्राट् के अधीन होकर दिन काट रहे हैं। भारत में राज-शक्ति की जय और उन्नति दूसरे पुराने सभ्य देशों से बहुत दिनों बाद हुई।इसीलिए मिस्री, बेबिलोनी और चीनी साम्राज्यों के बहुत दिनों बाद भारत-साम्राज्य स्थापित हुआ। एक यहूदी जाति में राज-शक्ति अनेक प्रयत्न करने पर भी पुरोहित-शक्ति पर अपना अधिकार बिल्कुल न जमा सकी। वैश्यों ने भी उस देश में कभी प्राधान्य नहीं पाया। प्रजा ने पुरोहितों के बन्धनों से छूटने की चेष्टा की थी।परन्तु भीतर ईसाई आदि धर्म-सम्प्रदायों के संघर्ष से और बाहर बलवान रोम-साम्राज्य के दबाव से वह मृतप्राय हो गयी।

जिस प्रकार पुराने युग में राज-शक्ति के सामने ब्राह्मण-शक्ति को बहुत प्रयत्न करने पर भी हार माननी पड़ी, उसी प्रकार वर्तमान युग में हुआ। इस नयी वैश्य-शक्ति के प्रबल आघात से कितने ही राजमुकुट धूल में जा मिले और कितने ही राजदण्ड सदा के लिए टूट गये।जो कोई सिंहासन सभ्य देशों में किसी तरह बच गया, वह इसलिए कि इससे इन्हीं नमक, तेल, चीनी या सुरा बेचनेवालों को अपने कमाये प्रचुर धन से अमीर और सरदार बनकर अपना गौरव दिखाने का मौका मिला।

संदर्भ-श्री विवेकानन्द साहित्य भाग-9

गतांक से आगे...

साधना विषयक बातें

योगमार्ग पर आराधनाशील साधक को विभिन्न प्रकार के पहलुओं का सामना करना होता है। कभी उतार, कभी चढ़ाव, मानसिक उद्वेग, कभी हँसी-खुशी, कभी बेबसी, उदासीनता, काम, क्रोध और न जाने इस योग मार्ग की यात्रा में कितने ही पड़ाव और हर मोड़ पर चौराहा और थोड़ी देर बाद दूसरे मोड़ पर फिर चौराहे आते हैं, जिससे साधक दिग्भ्रमित हो जाता है यदि उस पर सद्गुरुदेव की असीम कृपा बराबर न बनी रहे तो।

मानव से अतिमानत्व की यात्रा में, दिव्य रूपान्तरण के लिए सफलता तभी संभव है जब साधक अपने सद्गुरु के बताए पथ पर निष्कपट भाव से, गाढ़ी प्रीति रखते हुए पूर्ण समर्पण भाव से आराधना करे। श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि श्री अरविन्द घोष, श्रीमां सहित कई प्राचीन योगियों के समय, उनके शिष्यों से उनका जो वार्तालाप हुआ है, उसको समय समय पर इस शीर्षक के अंतर्गत देंगे जिससे आराधनाशील साधकों को इस मार्ग में सहायता मिल सकें।

www.the-comforter.org

प्रश्नः- बीच-बीच में अपने भीतर देखती हूँ कि गंभीर स्तर से बहुत सुन्दर, आलोकमय, पवित्र, शांत कोई फूल जैसी चीज तुम्हें पुकारती हुई ऊपर उठती है। कुछ ऊपर उठने के बाद देखती हूँ कि ऊपर से आपकी कई सारी चीजें नीचे उतर, उसके साथ मिल जाती है।

उत्तरः- जो ऊपर उठती है, वह है, तुम्हारी Psychic (चैत्य) चेतना-जो ऊर्ध्व चेतना के स्तर पर उठती है। वह उस स्तर की शक्ति, प्रकाश, शांति आदि के साथ मिलकर उन्हें आधार में नीचे ले आती है। फूल बनने का अर्थ है तुम्हारा Psychic Surrender (चैत्य समर्पण) हो रहा है।

प्रश्नः- अब देख रही हूँ कि सिर के चारों ओर एक शांत, शक्तिशाली और प्रकाशमय कुछ घूम रहा है और तन, मन, प्राण से कुछ शुष्क और बासी फूल जैसा झर रहा है।

उत्तरः- यह है ऊर्ध्व चेतना का अवतरण और आधार पर उसका प्रभाव।

समय की माँग के अनुसार साधना होती है। पहले थी आंतरिक साधना, सहज ध्यान की अवस्था-अब माँग है भीतर-बाहर को, एक करने की-देह चेतना तक को भी।

प्रश्नः- आपने लिखा था "...कि काम के समय खूब गंभीर अवस्था में न जाना ही बेहतर है।" गंभीर अवस्था में जाना क्या बुरा है? मेरी जब ऐसी अवस्था होती है तब देखती हूँ कि मेरा बाहरी भाग जो करना होता है, कर रहा होता है...।

उत्तरः- वही ठीक है। "गंभीर" में जाने का मेरा मतलब था गंभीर ध्यान में मग्न होना। कोई यदि अचानक ध्यानभंग कर दे तो उसका परिणाम अच्छा न भी हो।

ये सब अनुभूतियाँ होनी बहुत अच्छी हैं। पहले-पहल ये अनुभूतियाँ केवल आती-जाती हैं, फिर आती हैं, टिकती नहीं लेकिन धीरे-धीरे जोर पकड़ती हैं, आधार भी अभ्यस्त होता जाता है। बाद में ज्यादा स्थायी होती है।

बड़ा राज्य True Physical (Spiritual Physical) सच्चा भौतिक (आध्यात्मिक भौतिक) हो सकता है और बालक-बालिका उस राज्य के पुरुष-प्रकृति शायद।

और सब ठीक है किंतु Psychic (चैत्य) सत्ता तन-मन-प्राण के पीछे रहती है और तीनों का स्पर्श करती है। मन के उस पार है अध्यात्म सत्ता और ऊर्ध्व चेतना।

जो तुमने देखा है वह ठीक ही है-फिर भी जिसे तुम खराब शक्ति कहते हो वह है सिर्फ साधारण प्रकृति। वह प्रकृति ही मनुष्य से प्रायः सब कुछ कराती है-साधना द्वारा उसके प्रभाव को अतिक्रम करना होता है-हाँ, आसानी से यह नहीं होता-दृढ़ स्थिर प्रयास से अंततः संपूर्ण रूप से हो जाता है।

प्रश्नः- श्रीमाँ, प्राण के नीचे एक समतल भूमि देखी। वहाँ देखी एक गाय। और मन के नीचे भी समतल भूमि देखी। उसपर देखा एक मयूर।

उत्तरः- समतल भूमि का अर्थ है मन और प्राण में चेतना की दृढ़ प्रतिष्ठा-मयूर है सत्य की शक्ति की विजय का लक्षण। गाय है सत्य के प्रकाश का प्रतीक।

साधारण मन के तीन स्तर हैं। चिंतन का

स्तर अथवा बुद्धि, इच्छाशक्ति का स्तर (बुद्धि प्रेरित will) और बहिर्मुखी बुद्धि। ऊर्ध्व मन के भी तीन स्तर हैं-Higher Mind, Illumined Mind, Intuition (ऊर्ध्वतर मन, प्रकाशित मन, अंतःप्रेरणा)। जब मस्तक में देखा है तो उसी साधारण मन के तीन स्तर होंगे-ऊपर की तरफ प्रकाश का अर्थ है प्रत्येक के अंदर एक विशेष भगवती शक्ति काम करने उतरी है।

प्राण की ऊर्ध्वगामी अवस्था है भगवान् की ओर, सत्य की ओर उठना। सत्य का (सुनहली) और Higher Mind (उच्चतर मन) का (नील वर्ण) प्रभाव मूर्त हो ऊपर उठ, नीचे उतर घूम रहा है, उस ऊर्ध्वगामी प्राणचेतना में।

जो चक्र तुमने देखा है वह प्राणिक Psychic (चैत्य) हो सकता है-समुद्र है vital consciousnes (प्राणिक चेतना), अग्निकुंड है प्राण की Aspiration (अभीप्सा), चील पक्षी (Eagle) प्राण की ऊर्ध्वगामी प्रेरणा-मन्दिर है Psychic (चैत्य) से प्रभावित प्राण प्रकृति का मन्दिर।।

जब साधक शुद्ध चेतना में निवास करने लग जाता है तब भी अन्य भाग रह जाते हैं, फिर भी शुद्ध चेतना का प्रभाव बढ़ते-बढ़ते धीरे-धीरे उन्हें निस्तेज कर देता है।

Higher Mind (उच्चतर मन) में निवास करना उतना कठिन नहीं है-जब चेतना मस्तक से जरा ऊपर उठती है तब उसका आरंभ होता है-किंतु Overmind (अधिमन) तक उठने में काफी समय लगता है, खूब बड़ा साधक न बन जाने तक नहीं होता। इन सब स्तरों पर वास करने से मन के बन्धन टूट जाते हैं, चेतना विशाल हो जाती है, क्षुद्र अहंकार कम हो जाता है, सब एक हैं, सभी भगवान् में हैं, इत्यादि भागवत और अध्यात्म ज्ञान की उपलब्धि सहज हो जाती है।

शिशु है तुम्हारा Psychic being (चैत्य पुरुष) जो तुम्हारे भीतर के सत्य को बाहर ले आ रहा है-रास्ता है Higher Mind (ऊर्ध्व मन) का रास्ता जो सत्य की ओर जा रहा है।

यह सच है-बहुतों को कुण्डलिनी-जागरण की अनुभूति नहीं होती, कुछ को होती है- इस जागरण का उद्देश्य होता है सब स्तरों को खोल देना और ऊर्ध्व चेतना के साथ जोड़ देना-लेकिन यह उद्देश्य अन्य उपायों से भी पूरा किया जा सकता है।

बड़ा स्तर अध्यात्म चेतना होगी, उसके बीच सत्य का मन्दिर, तुम्हारे Vital (प्राण) के साथ इस स्तर का संबंध स्थापित हुआ है, मानो इस सेतु पर से ऊर्ध्व की शक्ति Vital (प्राण) में चढ़ना-उतरना कर रही है।

माँ की ही एक Emanation अर्थात् उनकी सत्ता और चेतना का अंश, प्रतिकृति और प्रतिनिधि बनकर प्रत्येक साधक के पास उसकी सहायता करने के लिये बाहर आती है या उसके साथ रहती है-असल में तो शक्ति ही स्वयं वह रूप धर कर आती है।

प्रश्नः- देख रही हूँ कि तुम्हारे जगत् से दो बालिकाएँ मेरी प्रिय सखियों की तरह बार-बार नीचे आती हैं। एक का रूप है नीलवर्णी आलोक की तरह और दूसरी का है सूर्यालोक के समान। एक का परिधान नीला, दूसरी का पीला।

उत्तरः- ऊर्ध्व मन की शक्ति (नील) और उसके ऊपर जो मन अथवा Intuition (अंतःप्रेरणा) है, संभवतः ये इन्हीं दो की शक्तियाँ हैं।

वेदयज्ञ में पाँच प्रकार की अग्नियाँ होती हैं, पाँच नहीं होने से यज्ञ पूर्ण नहीं होता। हम कह सकते हैं कि Psychic (चैत्य), मन, प्राण, तन और अवचेतना में अग्नि, ये पाँचों अग्नि आवश्यक हैं।

नील-Higher Mind (उच्चतर मन), सूर्यालोक-Light of Divine Truth, (दिव्य सत्य का प्रकाश), उज्ज्वल लाल-या तो Divine Love (दिव्य प्रेम) नहीं तो ऊर्ध्व चेतना की Force (शक्ति)।

प्रश्नः- मेरी हर समय नीरव गंभीर एकांत में रहने की इच्छा होती है। बहिर्मुखी होकर और हल्की-फुल्की गपशप में चंचल हो जाती हूँ।

उत्तरः- Inner Being (आंतरिक सत्ता) में जो हो रहा है, उसी के फलस्वरूप अंदर से नीरवता की ओर खिंचाव है।

ये सब प्रतीक (symbols) हैं जैसे कमल चेतना का प्रतीक है, सूर्य ज्ञान का या सत्य का, चन्द्र आध्यात्मिक ज्योति का, तारे सृष्टि का, अग्नि तपस्या या Aspiration (अभीप्सा) का, सुनहला गुलाब सत्य चेतनामय प्रेम और समर्पण का।

सफेद कमल-श्रीमाँ की चेतना (Divine Consciousness)। गाय है चेतना और प्रकाश का प्रतीक। सफेद गाय का अर्थ है ऊपर की शुद्ध चेतना।

तुमने कहा था कि तुमने ध्यान में कुछ लिखा हुआ देखा-उसके उत्तर में मैंने कहा था कि जैसे ध्यान में नाना दृश्य दिखायी देते हैं, उसी तरह ध्यान में कई तरह की लिखावट भी दिखाई देती है। इन सब लेखों को हम लिपि या आकाशलिपि कहते हैं। इन लेखों को बंद आँखों से भी देख सकते हैं, खुली आँखों से भी।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

जीवन में सबसे बडी तपस्या कला है

31 दिसम्बर 87 का प्रातः माँ का स्वर्गवास।

तीन जनवरी 1988 को मैं भौतिक रूप से अनाथ हो गया। तीन वर्ष की उम्र में पिताजी का स्वर्गवास हो जाने के कारण मेरी जननी ने दोहरा भार वहन करते हुए मुझे कभी भी पिताजी का अभाव महसूस नहीं होने दिया। अपना पूरा जीवन उसने रणभूमि में जूझते हुए बिताया। पूरे जीवन में उसके अन्दर मैंने कभी निराशा के भाव नहीं देखे। एक वक्त रूखा सूखा खाकर भी उसने रणभूमि में हार नहीं मानी। यहां तक कि आखिरी समय में भी मृत्यु का वरण करने के लिये बहादुरी से उसके पास आगे बढ़कर उसका स्वागत किया। मृत्यु भय से संसार में न डरने वाले चन्द लोग ही जन्मे हैं। मैं ने अनायास या यूं समझो कि किसी अज्ञात शक्ति की प्रेरणा से उसकी हर आज्ञा का पालन किया। भारत के सभी धार्मिक तीर्थ स्थानों पर दो २ तीन २ बार उसे ले गया। उस समय मुझे ईश्वर की सत्ता तक में विश्वास नहीं था, परन्तु फिर भी उसके हर आदेश का पालन करते हुए मैंने उसे तीर्थों का भ्रमण करवाया। उसके रहते मैं नहीं समझा परन्तु अब समझ रहा हूँ कि मेरी आध्यात्मिक उन्नति का कारण मेरी जननी का आशीर्वाद मात्र है। उसका अदम्य साहस और वीरता का गुण ही मेरे खून में मौजूद होने के कारण मैं आज इस स्थिति में पहुँच सका हूँ। उसकी मृत्यु ने मुझे पूर्ण रूप से अपने ध्येय तक पहुँचने की हिम्मत बंधाई। ऐसी अजेयी और साहसी जननी के खून से मेरी उत्पत्ति हुई। अब मैं अच्छी तरह समझ रहा हूँ कि संसार की कोई शक्ति मेरा रास्ता नहीं रोक सकती है। मैं अबाध गति से अपने पथ पर बढ़ता हुआ अपने गन्तव्य तक पहुँचूंगा ही। इसका पूर्ण श्रेय केवल उस मेरी वीर जननी को ही है।

रामलाल 3.1.88

वैदिक मनोविज्ञान के अनुसार

मनुष्य शरीर का संघटन

यन्जन्नेवं सदात्मान योगी विगत कल्मषः

सुखेन ब्रह्मसंस्पर्श मत्यन्तं सुखमश्नुते ।। 28 ।।

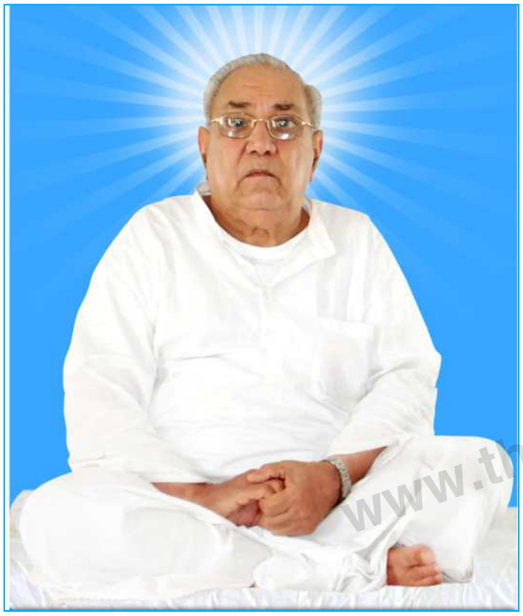

''पाप रहित योगी इस प्रकार निरंतर आत्मा को (परमात्मा में) लगाता हुआ, सुख पूर्वक परब्रह्म परमात्मा की प्राप्तिरूप अनन्त आनन्द को अनुभव करता है''। आज वह आनन्द कहाँ चला गया। गीता के उपदेशक और व्याख्याता त्याग, तपस्या, दान, पुण्य, स्वर्ग, नरक का उपदेश दे रहे हैं। इस मूल तत्त्व की अनुभूति क्यों नहीं करवा रहे हैं? गीता के उपदेश को अर्जुन से अधिक कोई नहीं समझ सकता है। उसने उपदेश सुनने के बाद जो कुछ किया, गीता हमें वही दर्शाती है। अर्जुन ने कौन सा दान पुण्य, त्याग, तपस्या गीता का उपदेश सुनने के बाद किया।

वैदिक मनोविज्ञान (अध्यात्म विज्ञान) के अनुसार मनुष्य शरीर सात तत्त्वों से संघटित है, जिसके कोशों में आत्मा अन्तर्निहित है। वे हैं :- 1. अन्नमय कोश 2. प्राणमयकोश 3. मनोमयकोश 4. विज्ञानमय कोश 5. आनन्दमयकोश 6. चित्मय कोश और 7. सत्मयकोश। अन्न से लेकर विज्ञान तक चार तत्त्व भौतिक सत्ता से सम्बन्धित है और आनन्द से सत् तक तीनों उस परम सत्ता (सत्+चित्+आनन्द) सच्चिदानन्दघन परब्रह्म परमात्मा से सम्बन्धित हैं। हिन्दू दर्शन के अुनसार मूलाधार से लेकर आज्ञाचक्र तक माया का क्षेत्र है। यानि अन्नमय कोश से विज्ञानयकोश तक माया का क्षेत्र है। इसके ऊपर के तीन लोक सत्य लोक, अलख लोक और अगम लोक उस परम सत्ता (सत्+चित्+आनन्द) के लोक हैं। आज्ञाचक्र को भेदकर ऊपर उठते ही जीवात्मा माया के क्षेत्र से निकल कर आनन्दमय कोश में प्रवेश कर जाता है। इसके साथ ही गीता और वेद में वर्णित अक्षय आन्तरिक दिव्य आनन्द की अनुभूति मनुष्य को होने लगती है। मेरे संत सद्गुरुदेव ने उस आनन्द को धरा पर अवतरित कर दिया है। उन्हीं की कृपा से, मैं उसकी प्रत्यक्ष रूप में अनुभूति कर रहा हूँ। आध्यात्मिक दृष्टि से मुझसे जुड़ने वाले लोगों को भी इसकी प्रत्यक्षानुभूतियाँ हो रही है, जो कि भौतिक जगत् में सत्यापित हो रही हैं।

–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

गुरुदेव का प्रवचन 22 मई 2003

देखिए ! पहले मैं आपको इस दर्शन की थोड़ी सी जानकारी दे देता हूँ ताकि आपको इस पथ पर चलने में कठिनाई नहीं होगी। क्योंकि आज हिन्दू धर्म के बारे में जो प्रचार-प्रसार हो रहा है, उसमें कोई क्रियात्मक Result (परिणाम) देने की कोई विधि नहीं है। देखिए ! हमारा दर्शन वेदान्त कहलाता है। वेदान्त प्लस योग फिर पूर्ण दर्शन होता है। अब केवल वेदान्त की किताबें बांच रहे हैं, पढ़ा रहे हैं; 'योग' के बिना मामला पार नहीं पड़ रहा है तो आज जो योग के नाम से बिक रहा है वह 'योग' नहीं है।

भारतीय योग दर्शन में जिस योग की बात कही है, उसका तो मुख्य उद्देश्य 'मोक्ष' है। उसका उद्देश्य 'मोक्ष' है, रोग है ही नहीं। मगर आज 'योग' जो है, 'रोग' का प्रर्यायवाची बन गया है। योग की बात सुनते ही कोई न कोई रोग के लिये कार्यक्रम है। हमारा योग, रोग की बात नहीं करता वो तो 'मुक्ति' की बात करता है। मगर मुक्ति तो मनुष्य की 'उच्चतम' स्थिति है, आखिरी विकास है, पूर्ण शांति की स्थिति है। मोक्ष के बारे में भी बड़ी अजीब-अजीब कल्पनाएँ है। वो ईसाई दर्शन कहता है, मर के स्वर्ग में जाएंगे तो मुक्ति होगी, और हमारा दर्शन कहता है मुक्ति-सुक्ति यहीं होगी, स्वर्ग और कहीं नहीं है, यहीं है। मगर हम इस बात को Prove (साबित) नहीं कर पा रहे हैं। इसलिये मेरे प्रोग्राम्स में नब्बे प्रतिशत रोग ही वाले लोग आते हैं। मैं डॉक्टर थोड़ा ही हूँ; समझे? मगर रोग जरूर ठीक होते हैं।

मैं आपको एक तरीका बताऊँगा। आपका अपने आप से परिचय कराऊँगा, दूँगा कुछ नहीं। किसी गुरु के पास देने-लेने की गुँजाईस नहीं है। मेरे शरीर में, आपके शरीर में कोई अंतर नहीं है भाई, मेरे पास कोई ऐसी additional (अतिरिक्त) चीज नहीं है जो आपके पास नहीं है और मैं दूँ। आप जन्म से ही पूर्ण हो, समझ नहीं पा रहे हो आप क्या हो। मेरे को तो आपको अपने आपसे Introduction (परिचय) करवाना है, आप क्या हो? कुछ देना-लेना नहीं। आप जन्म से ही पूर्ण हो, नहीं समझ पा रहे हो आप क्या हो?

गुरु केवल रास्ता बताता है, चलने के लिये तो शिष्य को मंजिल तक कोशिश करनी पड़ती है, चलना खुद को ही पड़ता है। मैं एक तरीका बताऊँगा, उस तरीके से आप आराधना करोगे तो ही

आपको फल मिलेगा, तो ही आपको लाभ होगा। यह आज का समय खराब कर दिया और जो आराधना बताऊँगा, वह नहीं करोगे तो कुछ नहीं होगा।

हमारे धर्म में मनुष्य एक जन्म में दो जीवन जीता है। पहले जन्मदाता भौतिक माता-पिता, पहले गुरु वो जो इस हाड़-मांस के शरीर की रचना करते हैं। दूसरा आध्यात्मिक गुरु जो आपको साक्षात्कार करवाता है। हमारे धर्म में एक मान्यता है, गुरु के बिना मुक्ति नहीं होगी। और गुरु के पास मुक्ति कोई खिलौना है जो जाते ही आपको हाथ में पकड़ा देगा। मुक्ति एक क्रियात्मक परिवर्तन है और scientifically prove हो रहा है इसलिये विज्ञान वाले हैरान हैं कि यह क्या कर रहा है?

डॉक्टर लोग बहुत परेशान हैं, हैरान भी हैं, जिज्ञासु भी हैं, आते भी बहुत हैं दीक्षा में। बहुत डॉक्टर मेरे शिष्य हैं। मैं उनको कहता हूँ कि एक डॉक्टर अंदर और बैठा है, हर आदमी के अंदर है, आपके अंदर बैठा है वह डॉक्टर। मैं तो उससे परिचय करवाऊँगा, बाहर वाले डॉक्टर को छोड़िये नहीं। देखिये विज्ञान तो अपने-आप में एक सच्चाई है, मगर अभी अपूर्ण सत्य है, दर्शन एक पूर्ण सत्य है। यह भारतीय दर्शन है जो मूर्तरूप ले रहा है, कोई Abnormal (असामान्य) परिवर्तन नहीं हो रहा है। कोई जादू नहीं है, कोई करिश्मा नहीं है, यह विकास है,

Due (शेष) था, शुरू हो गया। कुछ भी आश्चर्य की बात नहीं है तो गुरु एक तरीका बताता है आराधना करने का।

अब अलग-अलग युगों में अलग-अलग आराधना होती रही, सतयुग की अलग थी, त्रेता की अलग, द्वापर की अलग, कलियुग की अलग, तो वो काम जो सतयुग, त्रेता, द्वापर में करते थे-वह काम अब हम नहीं कर सकते, वो हमारी सामर्थ्य नहीं है। वो नहीं कर सकते इसलिये धर्माचार्य कह देते हैं फिर तो भगवान् नहीं मिलेगा। कहाँ है? ढूँढ़े कहाँ? कहाँ जायेगा, छुपके कहाँ जायेगा? अंदर बैठा है, छुप नहीं सकता अभी बोलेगा! मगर वो अंदर घुसने का तरीका नहीं, बाहर ढूँढ रही हैं दुनिया। योग का एक सिद्धांत है- जो ब्रह्माण्ड में है वही सारा पिण्ड में, जो पिण्ड में है वही ब्रह्माण्ड में है।

जब सारा ब्रह्माण्ड आप में है तो बाहर फिर कुछ भी नहीं है आपको जो कुछ भी मिलेगा आपके अंदर से मिलेगा। बाहर से उम्मीद करना व्यर्थ है। अब वो कलियुग में मतलब आराधना की जो हमारे दर्शन में विधि है कि कलियुग में केवल हरिनाम का जप ही सारी समस्याओं का अंत करता है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है-''कलियुग केवल नाम आधरा, सुमिर-सुमिर नर उतरहि पारा।'' मैं आपको एक नाम बताऊँगा।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

रूपान्तरण (Transformation)

परमेश्वर ने सृष्टि का सृजन किया और उसमें विभिन्न प्रकार के जीव-जन्तुओं, पशु-पक्षियों व पेड़-पौधों आदि का विकास किया। चल-अचल, सजीव-निर्जीव सबका सृजन किया है। भूमण्डल पर 'मनुष्य', परमेश्वर की सर्वोच्च कृति है, उसमें ज्ञान और विज्ञान की असीम पराकाष्ठा है। सृष्टि के क्रमिक विकास में एक कोशिकीय जीव से विशालकाय जीवों के साथ साथ मनुष्य का जन्म हुआ। प्रत्येक मनुष्य के चेतना का स्तर अलग अलग होता है। चेतना के स्तर के अनुसार ही मनुष्य की जगत् में पहचान होती है।

अतः मनुष्य सृष्टि की सर्वोच्च कृति है लेकिन अभी इस कृति में बहुत सारी अपूर्णता है जो अगले विकास में इन अपूर्णताओं को पूर्ण किया जा सकता है और वह है-अतिमानव। एक ऐसा दिव्य मानव जो रोग, शोक, पीड़ाओं और दुःख-दर्दों से रहित होगा। वर्तमान मानव और अतिमानव में इतना भारी अंतर होगा कि अभी किसी से तुलना, कर ही नहीं सकते। महर्षि श्री अरविन्द के अनुसार मानव मात्र का दिव्य रूपान्तरण हो जाएगा। इस कार्य के लिए उन्होंने आध्यात्मिक तपस्या करके सृजनकर्ता को, भूमण्डल पर अवतरित होने के लिए करुण पुकार की। नये युग अर्थात् सत्युग के आगमन और नये जगत् के निर्माण के लिए 24 नवम्बर 1926 को भूमण्डल पर परमसत्ता का भौतिक में अवतरण हुआ। उस अवतरित शक्ति ने 1967-68 से अपना कार्य प्रारम्भ किया। गहन आराधना के बाद मनुष्य मात्र के रूपान्तरण के लिए संजीवनी मंत्र की दीक्षा दी और लाखों लोगों को चेतन कर दिया।

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग का मुख्य उद्देश्य है-संपूर्ण मानव जाति का दिव्य रूपान्तरण। इस कार्य के लिए उन्होंने जो संजीवनी मंत्र दिया है, उनका बिना कोई पल गँवाएं सघन मानसिक जाप करते हुए, सुबह-शाम नियमित ध्यान करना है। इस कार्य में किसी भी प्रकार की चालाकी, कपटता और अहंकार बाधक ही होगा। जिन्होंने संजीवनी मंत्र की दीक्षा ली है-वे प्रतिपल पूरी एकाग्रता से, अपने गृहस्थ जीवन के सभी कर्तव्यों का पालन करते हुए, इस आराधना को करें। सद्गुरु आराधना का पथ बताते हैं, चलना तो शिष्य को ही पड़ता है। सद्गुरु तभी प्रसन्न होते हैं, जब शिष्य आराधना में आगे बढ़ता है।

इस रूपान्तरण के कार्य के लिए श्री अरविन्द ने विस्तार से समझाया है कि यह कैसे पूर्ण होगा ? साधकों के ज्ञान-बोध के लिए यह लेख दिया जा रहा है-

www.the-comforter.org

परम आत्मन् का अतिमानसिक चेतना में और एक नवीन देह में, नयी जाति में आविर्भाव एक अनिवार्य घटना है, जो कि उतनी ही स्वाभाविक और सुनियत है जितनी बनमानुस के प्रादुर्भाव के बाद मनीषी मानव की अभिव्यक्ति। वस्तुतः अब केवल यही जानना बाकी है कि इस नये विकास में हम शामिल होंगे या यह हमारे बिना घटित होगा। इस असमंजस को श्री अरविन्द ने इन शब्दों में व्यक्त किया है-यदि जड़तत्त्व में हमारे जन्म का गुह्य अर्थ सचमुच पृथ्वी पर आत्मा का उन्मीलन है, यदि मूलतया प्रकृति के अंदर चेतना का विकास घटित होता रहा है तो मानव जैसा कि वह आज है, उस विकास की पराकाष्ठा नहीं हो सकता। वह आत्मा की एक अत्यधिक अपूर्ण अभिव्यक्तिहै, और स्वयं मानस भी एक बहुत सीमित रचना तथा उपकरण है । मानस, चेतना का मध्यवर्ती पद है, मनोमय जीव मात्र एक संक्रमणकालीन जीव हो सकता है। अतः यदि मनुष्य मानस से ऊपर उठने में असमर्थ रहा तो आवश्यक है कि उसे अतिक्रांत कर अतिमानस का और अतिमानव का आविर्भाव हो, और वे इस जगत् का नेतृत्व करें। किन्तु यदि उसका मानस अपने आपको उस ओर खोल सके जो उससे ऊपर है तो कोई कारण नहीं कि स्वयं मनुष्य रूपांतरण अतिमानस को और अतिमानवता को प्राप्त न हो, या प्रकृति के अंदर रूप धारती हुई आत्मा की इस उच्चतर कोटि के विकास हेतु, कम से कम अपने मानस, प्राण और शरीर को इस उपयोग के लिए न दे सके। श्री अरविन्द का कहना है कि हम एक नये

रूपांतर संबंधी संधिकाल में आ पहुँचे हैं और यह उतना ही निर्णायक है जितने वे समय रहे होंगे जबकि जड़तत्त्व के अंदर जीवन का या जीवन के अंदर मानस का आविर्भाव हआ था। अपितु हमारा अपना निश्चय भी बहुत महत्त्व रखता है, क्योंकि एक सापेक्ष, नगण्य वस्तु सम मानव के अस्तित्व की उपेक्षा कर प्रकृति को अपने परिवर्तन साधित न करने देकर, इस बार हम अपने निजी विकास के सचेतन सहयोगी बन सकते हैं; अब या तो हम इस चुनौती का सामना करें, या फिर जैसे श्री अरविन्द ने कहा है, अपने आपको अतिक्रांत हो जाने दें।

भविष्य की संभावना

इस नयी जाति की विशेषता क्या होगी ? इस लक्ष्य की समझ ही रूपांतर के पथ पर एक बड़ा कदम है, क्योंकि यदि हमें इस अलौकिक भविष्य की थोड़ी भी समझ हो, यदि हम इसके लिए तनिक भी अभीप्सा रखते हों तो एक अदृश्य मार्ग हम बना देते हैं जिसके द्वारा हमारी निजी शक्ति से अधिक प्रबल शक्तियों के लिए प्रवेश करना संभव हो जाता है, और उनके साथ हम सहयोग करने लगते हैं। वस्तुतः अतिमानस में संक्रमण हमारी मानुषिक शक्तियों के द्वारा नहीं, बल्कि ऊर्ध्व महाशक्ति के प्रति अधिकाधिक सचेतन समर्पण द्वारा ही संपादित होगा।

अतिमानसिक जीव की चेतना किस प्रकार की होगी, यह हम पहले ही बता चुके हैं, किन्तु श्री अरविन्द के शब्दों में पुनः यह कहना अनुचित न होगा कि मानव का अपनी नैसर्गिक पराकाष्ठा पर आरूढ़ होना अतिमानवता नहीं है। वह मानव के गौरव, ज्ञान, बल, बुद्धि, संकल्प अथवा चरित्र की, उसकी मेधा, ऊर्जा, साधुता, प्रीति, पवित्रता या पूर्णता की उत्कृष्ट कोटि नहीं है। अतिमानस मनोमय मानव से, उसके सीमाक्षेत्र से परे की चीज है। पराकोटि पर पहुँचा हुआ मानस मनुष्य को केवल कठोर बनाता है। वह उसे दिव्य नहीं बना पाता; मात्र आनंद तक प्रदान नहीं कर सकता, क्योंकि वह विभाजन-यंत्र है और उसके सभी श्रेणी विभाग चाहे वे चेतना की अपूर्व यात्रा धार्मिक हो या राजनैतिक, आर्थिक या भावात्मक, सब अनिवार्यतः शक्ति पर निर्भर करते हैं।

www.the-comforter.org

मानस का संघटन ही इस तरह हुआ है कि मानवीय सत्यों की संपूर्णता को अपनाने की क्षमता उसमें नहीं है और यदि अपनाने में सफल हो भी जाये तो उसे साकार करने में वह असमर्थ रहता है। अब यदि सचमुच सामूहिक विकास से हमें मानवीय और सामाजिक महानताओं के मनोरम मिश्रण से अधिक और कुछ प्राप्त होने वाला नहीं है-संत विस्सेण्ट डि पौल, जिनके साथ कुछ समाजवाद साम्यवाद का पुट और व्यवस्थित अवकाशों का आयोजन रहे, बस इतना भर-तो हमें यह मानना पड़ता है कि मानस के वैयक्तिक विकास की चरमसीमा के 'कोटि- कोटि सुवर्ण पक्षियों', अथवा तन्त्री-चतुष्कों से भी यह निष्पत्ति कहीं नीरस है।

यदि इतनी सहस्राब्दियों के कष्ट और प्रयास का परिणाम पृथ्वी पर केवल इस तरह की सार्वजनिक रंगरेलियाँ भर हैं, तब तो शायद प्राचीन परंपराओं में घोषित प्रलय या विश्वविध्वंस भी आखिर कुछ बुरा न रहे।

अपने चरम उत्कर्ष पर पहुँच कर भी हमारी मानसिक अवस्थाएँ यदि लक्ष्यपूर्ति नहीं कर पाती तो हमारे प्राण और देह की स्थिति तो और भी असंतोषप्रद है। यह विश्वास करना कठिन है कि जब परम आत्मन् अपने आपको एक अतिमानसिक चेतना में अभिव्यक्त करेगा तो वह हमारे इस शरीर से, जोकि विघटन और गुरुत्व संबंधी भौतिक नियमों का शिकार है, संतुष्ट रहेगा, और अपनी अभिव्यक्ति के साधन रूप में मात्र मानसिक पदावली -लेखनी, खोदनी या तूलिका की सीमित संभावनाओं को स्वीकार करेगा।

दूसरे शब्दों में कहें तो इस भौतिक तत्त्व का परिवर्तन आवश्यक है। यही है 'रूपांतर' का उद्देश्य । और सबसे पहले हमारा प्रमुख भौतिक तत्त्व है यह देह - आध्यात्मिक परंपरा में शरीर एक अड़चन माना जाता रहा है और आध्यात्मीकरण अथवा रूपांतरण के वह अयोग्य समझा गया है। उनके विचार में वह भारी बोझा बन आत्मा को पार्थिव प्रकृति के साथ जकड़े रखता है और न तो उसे परम आत्मन् में आध्यात्मिक सिद्धि की ओर आरोहण करने देता है, न परब्रह्म में वैयक्तिक सत्ता के विलयन की ओर।

क्रमशः अगले अंक में...

नीरव शांति

सत्त के भीतर गहराई में ऐसी शांति है जो संपूर्ण सत्ता में नीचे शरीर तक नीरवता ले जाती है–यदि हम इसे ऐसा करने की अनुमति दें तो। यही वह शांति है जिसे तुम्हें खोजना चाहिये और तब तुम्हें वह नीरवता मिलेगी जिसे तुम चाहते हो।

–महर्षि श्री अरविन्द

अपने को उस "अनन्त" में लय करने का प्रयत्न करें

मात्र वैदिक दर्शन का यही क्रियात्मक योग, सम्पूर्ण विश्व में शांति स्थापित कर सकता है।

'हमारे ही नहीं विश्व के सभी ईश्वरवादी धर्मों के धर्माचार्य एक ही स्वर से यही कह रहे हैं- 'अपने को उस अनन्त में लय करने का प्रयत्न करें, जहाँ कभी दुःख का लेश नहीं'। शैव सिद्धान्त कहता है, 'वह अनंत आपके अंदर ही स्थित है। उसमें लय होने के लिए और कहीं जाने की जरूरत नहीं है।' मनुष्य भौतिक शरीर में रहते हुए, सभी क्लेशों का अन्त करके पूर्ण शांति प्राप्त कर सकता है, अर्थात् जीवन मुक्त हो सकता है। हमारे शैव दर्शन का यह संदेश मानवता में मूर्तरूप लेने लग गया है। मात्र वैदिक दर्शन का यही क्रियात्मक योग, सम्पूर्ण विश्व में शांति स्थापित कर सकता है। और यह कार्य करना उसने प्रारम्भ कर दिया है। नतीजा सम्पूर्ण विश्व के सामने शीघ्र आना चाहता है।'

–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग
5.5.2003, मुम्बई

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है ?

सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ? ध्यान करके देखें।

शक्तिपात-दीक्षा

गुरुदेव सियाग सिद्धयोग आराधना की एक सरल विधि है। इसमें साधक को सघन मंत्र जाप व ध्यान करना होता है।

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामालाल जी सियाग एक सिद्धगुरु हैं जो शक्तिपात दीक्षा से, अपनी दिव्य शक्ति को संजीवनी मंत्र द्वारा शिष्य में संप्रेषित कर, उसकी सुषुप्त शक्ति, कुण्डलिनी को जाग्रत कर देते हैं।

गुरुदेव सियाग का संजीवनी मंत्र, एक चेतन (Enlightened) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।

गुरुदेव की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें – 07533006009

(सभी जाति एवं धर्मों के जिज्ञासु स्त्री-पुरुषों को सस्नेह निमंत्रण)

www.the-comforter.org

ध्यान की विधि

- आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से, खुली आँखों से देखें।
- फिर गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करूण प्रार्थना करें।
- अब आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं) केन्द्रित करते हुए, संजीवनी मंत्र का मानसिक जाप (बिना होंठ-जीभ हिलाए) करते रहें।
- इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ध्यान की अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी।
- इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रूप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।
- नाम जप ही ध्यान की चाबी है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय जपें।

Method of Meditation

- Sit in a comfortable position and look at Gurudev's image for a while.
- Then pray to Gurudev to help you meditate for 15 minutes.
- Now close your eyes and while focussing on Gurudev's image at the centre of your forehead, mentally chant (without moving your lips and tongue) the Sanjeevani Mantra given by Gurudev.
- During this time if you undergo automatic yogic movements, then let them happen. Don't try to stop them. After requested time is over, they will stop.
- Meditate in this way for 15 minutes, in the morning and evening, on an empty stomach.
- For profound meditation, chant the mantra as much as possible while performing your daily activities.

मुख्यालय:- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) 342001 सम्पर्क : +91-2912753699, +91-9784742595
Email: avsk@the-comforter.org, Website: www.the-comforter.org

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365*POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2020 & VALID UP TO 31.12.2022
DATE OF ISSUE : EVERY MONTH 27 & DISPATCH 28-29

मनाव का दिव्य रूपांतरण

उर्ध्व लोक से अवतीर्ण ऐसी भागवत सत्ता, जो कि समर्थ सद्‌गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग द्वारा मानव मात्र में अनुप्राणित हो रही है एवं महर्षि श्री अरविन्द घोष के इस कथन को 'आगामी मानव जाति दिव्य देह धारण करेगी।' चरितार्थ कर रही है।

www.the-comforter.org

◆◆◆

—— अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें ——
Spiritual Science . स्पिरिचुअल साइंस
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी पोस्ट बॉक्स नं. 41, जोधपुर (राज.) 342001
फोन: + 91 291 2753699, मो. : +91 9784742595 वेबसाइट: www.the-comforter.org

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,

श्रीमान्______________________________

स्वत्वाधिकारी: अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित।